Climate Change

Glossary (HINDI)

iihs®
INDIAN INSTITUTE FOR
HUMAN SETTLEMENTS

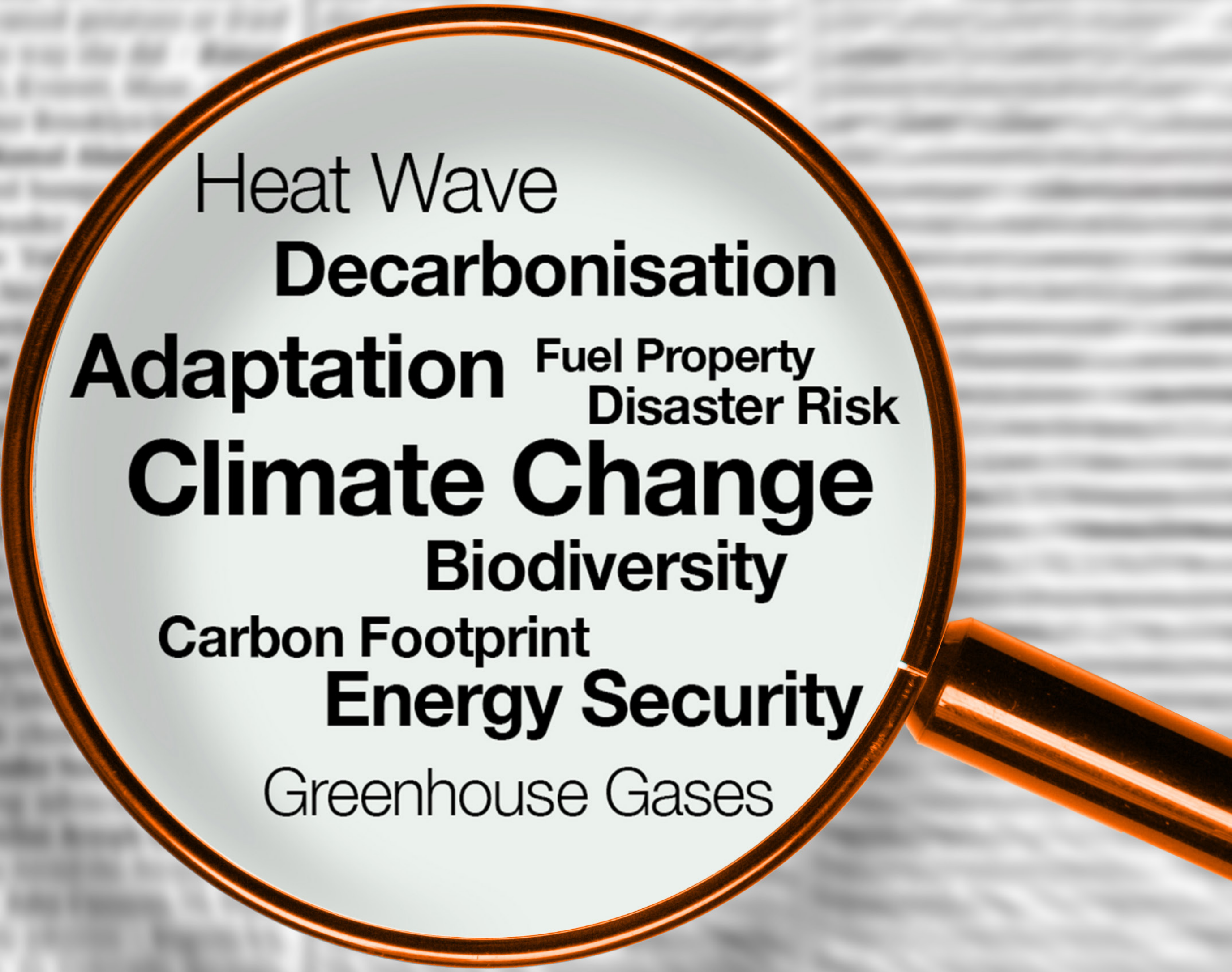

Compiled by:

Kaavya Pradeep Kumar, IIHS Word Lab
Chandni Singh and Ritwika Basu, IIHS Practice
Preedip Balaji, IIHS Library

Translated by:

Pradip Srivastav and Sunita Bhadauria

Design & Layout:

IIHS Design Team

DOI: https://doi.org/10.24943/CCGEMTHK02.2021

KG Link: https://iihs.co.in/knowledge-gateway/climate-change-glossary/

Process followed

1. The team compiled the list of glossary terms, based on the IPCC special report (IPCC, 2012), and IPCC Assessment report 5, Working Groups I, II and III reports (IPCC, 2013; IPCC, 2014; and a special report (IPCC, 2018).
2. The terms identified were prioritised based on their importance for teaching, and hence categorised as high, medium and low. This is a comprehensive glossary that is more than sufficient for learners who are newly acquainted with the subject.
3. Certain terms from the IPCC glossaries were excluded mainly because of how much their definitions overlapped with others in the glossary. For e.g., 'climate extreme' was not included in the final list because the term 'extreme weather' was already in place. It is a more commonly used term and hence more applicable to learners.
4. The IPCC list also covered generic terms such as 'chronology' and 'coping'; the definitions for which had already been included in other glossaries such as the one on disaster risk and resilience. To reduce overlap, we excluded those as well.
5. The level of specificity and frequency of use of some terms also played a factor in their exclusion. While the final list covers a vast majority of definitions provided by the IPCC, terms such as 'adaptation options', 'adaptation management' were dropped in favour of more commonly-used ones such as 'adaptation limit', 'adaptation needs'.
6. We also checked the Synthesis Report (IPCC, 2014), which had a lot of definitions that were missing in the sources mentioned in point 1, including fundamental climate science terms such as 'ENSO', 'afforestation', 'albedo', 'ocean acidification' and 'radiative forcing'. Additionally, common policy terms such as 'climate finance', 'fuel poverty', 'REDD+' and 'energy access' were also drawn from the 2014 Synthesis Report.
7. In addition to the IPCC, we also skimmed through other public platforms such as the BBC and the Climate Reality Project, as well as other educational institutions' compilations (UC Davis) to double-check if there were some basic terms that the UN sources did not have. Terms such as the 'UNFCCC', the 'IPCC' itself, 'climate science' and 'weather' were added as a result.

References

BBC. (2014, April 13). Climate change glossary. https://www.bbc.com/news/science-environment-11833685

IPCC, 2012: Glossary of terms. In: Managing the Risks of Extreme Events and Disasters to Advance Climate Change Adaptation [Field, C.B., V. Barros, T.F. Stocker, D. Qin, D.J. Dokken, K.L. Ebi, M.D. Mastrandrea, K.J. Mach, G.-K. Plattner, S.K. Allen, M. Tignor, and P.M. Midgley (eds.)]. A Special Report of Working Groups I and II of the Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC). Cambridge University Press, Cambridge, UK, and New York, NY, USA, pp. 555-564.

IPCC, 2013: Annex III: Glossary [Planton, S. (ed.)]. In: Climate Change 2013: The Physical Science Basis. Contribution of Working Group I to the Fifth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate Change [Stocker, T.F., D. Qin, G.-K. Plattner, M. Tignor, S.K. Allen, J. Boschung, A. Nauels, Y. Xia, V. Bex and P.M. Midgley (eds.)]. Cambridge University Press, Cambridge, United Kingdom and New York, NY, USA, pp. 1447-1465.

Allwood J. M., V. Bosetti, N. K. Dubash, L. Gómez-Echeverri, and C. von Stechow, 2014: Glossary. In: Climate Change 2014: Mitigation of Climate Change. Contribution of Working Group III to the Fifth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate Change [Edenhofer, O., R. Pichs-Madruga, Y. Sokona, E. Farahani, S. Kadner, K. Seyboth, A. Adler, I. Baum, S. Brunner, P. Eickemeier, B. Kriemann, J. Savolainen, S. Schlömer, C. von Stechow, T. Zwickel and J.C. Minx (eds.)]. Cambridge University Press, Cambridge, United Kingdom and New York, NY, USA, pp. 1249-1279.

IPCC, 2018: Annex I: Glossary [Matthews, J.B.R. (ed.)]. In: Global Warming of 1.5°C. An IPCC Special Report on the impacts of global warming of 1.5°C above pre-industrial levels and related global greenhouse gas emission pathways, in the context of strengthening the global response to the threat of climate change, sustainable development, and efforts to eradicate poverty [Masson-Delmotte, V., P. Zhai, H.-O. Pörtner, D. Roberts, J. Skea, P.R. Shukla, A. Pirani, W. Moufouma-Okia, C. Péan, R. Pidcock, S. Connors, J.B.R. Matthews, Y. Chen, X. Zhou, M.I. Gomis, E. Lonnoy, T. Maycock, M. Tignor, and T. Waterfield (eds.)]. World Meteorological Organization, Geneva, Switzerland, pp. 541-562.

IPCC, 2014: Annex II: Glossary [Mach, K.J., S. Planton and C. von Stechow (eds.)]. In: Climate Change 2014: Synthesis Report. Contribution of Working Groups I, II and III to the Fifth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate Change [Core Writing Team, R.K. Pachauri and L.A. Meyer (eds.)]. IPCC, Geneva, Switzerland, pp. 117-130.

IPCC, 2014: Annex II: Glossary [Agard, J., E.L.F. Schipper, J. Birkmann, M. Campos, C. Dubeux, Y. Nojiri, L. Olsson, B. Osman-Elasha, M. Pelling, M.J. Prather, M.G. Rivera-Ferre, O.C. Ruppel, A. Sallenger, K.R. Smith, A.L. St. Clair, K.J. Mach, M.D. Mastrandrea, and T.E. Bilir (eds.)]. In: Climate Change 2014: Impacts, Adaptation, and Vulnerability. Part B: Regional Aspects. Contribution of Working Group II to the Fifth Assessment Report of the Intergovernmental Panel on Climate Change [Barros, V.R., C.B. Field, D.J. Dokken, M.D. Mastrandrea, K.J. Mach, T.E. Bilir, M. Chatterjee, K.L. Ebi, Y.O. Estrada, R.C. Genova, B. Girma, E.S. Kissel, A.N. Levy, S. MacCracken, P.R. Mastrandrea, and L.L. White (eds.)]. Cambridge University Press, Cambridge, United Kingdom and New York, NY, USA, pp. 1757-1776.

UC Davis Science & Climate. (2020, July 21). Climate change terms and definitions. https://climatechange.ucdavis.edu/science/climate-change-definitions/

UNFCCC. (2020). Glossary of climate change acronyms and terms
https://unfccc.int/process-and-meetings/the-convention/glossary-of-climate-change-acronyms-and-termss

जलवायु में अचानक होने वाले परविर्तन

कई दशकों या इससे कुछ कम समय के दौरान, जलवायु तंत्र में होने वाले बड़े पैमाने के ऐसे परविर्तन, जो अगले कुछ दशकों तक कायम रहते हैं (या इस दौरान इनके कायम रहने का अनुमान होता है)। साथ ही, इनके कारण मानवीय और प्राकृतकि तंत्रों को काफ़ी नुकसान पहुँचता है।

AR5 WG1

अनुकूलन

यह एक ऐसी प्रक्रयिा है, जिससे कोई जीव, जलवायु की वास्तवकि या अपेक्षति स्थिति और इसके प्रभावों के साथ अपना तालमेल बठिाता है. मानवीय तंत्रों के मामले में, अनुकूलन का मतलब जलवायु के कारण हो सकने वाले नुकसान को कम करना या उनसे बचना है या फरि उसके लाभदायक अवसरों का फ़ायदा उठाना है. कुछ प्राकृतकि तंत्रों में, मानवीय हस्तक्षेप से जलवायु की अनुमानति स्थितियों और इसके प्रभावों के हिसाब से तालमेल बठिाने में मदद मलि सकती है।
क) वृद्धशिील अनुकूलन: अनुकूलन से जुड़े ऐसे कार्य, जनिका मुख्य उद्देश्य कसिी तंत्र या प्रक्रयिा के मूलतत्व और संपूर्णता को दिए गए पैमाने पर अनुसार बनाए रखना है।
ख) परविर्तनशील अनुकूलन: अनुकूलन, जो जलवायु परविर्तन और इसके प्रभावों के जवाब में कसिी तंत्र की बुनयिादी वशिेषताओं में बदलाव करता है।

AR5 WG2

अनुकूलन का मूल्यांकन

ऐसे कार्य, जनिसे हम जलवायु परविर्तन के अनुसार अनुकूलन के लिए वकिल्पों की पहचान करते हैं और इन वकिल्पों का मूल्यांकन उपलब्धता, लाभ, लागत, प्रभावति, कुशलता और व्यवहार्यता जैसे मानकों के अनुसार करते हैं।

AR5 WG2

अनुकूलनीय क्षमता

यह तंत्रों, संस्थानों, मनुष्यों और दूसरे जीवों की वह क्षमता होती है, जसिके अनुसार वे कसिी नुकसान की आशंका होने पर, स्वयं को उस नुकसान के हसिाब से ढालते हैं, मौकों का फ़ायदा उठाते हैं या परणिामों के हसिाब से जवाबी कार्यवाही करते हैं।

AR5 WG2

अनुकूलन की कमी

कसिी तंत्र की वर्तमान स्थिति और जलवायु की मौजूदा परस्थितियों और परविर्तनशीलता के कारण होने वाले प्रतकिूल प्रभावों को कम करने वाली स्थिति के बीच के अंतर को अनुकूलन की कमी कहते हैं।

AR5 WG2

अनुकूलन की आवश्यकताएँ

ऐसी स्थितियाँ, जनिमें जलवायु प्रभावों से परसिंपत्तयिों और लोगों की सुरक्षा को सुनश्चिति करने वाले कदम उठाने की आवश्यकता होती है।

AR5 WG2

अनुकूलन के अवरोध

ऐसे कारक, जो अनुकूलन के कार्यों को लागू करने और इनकी योजना तैयार करने के काम को कठनि बनाते हैं या इसके वकिल्पों को सीमति करते हैं।

AR5 WG2

अनुकूलन की सीमा

ऐसा बनि्दु जहाँ अनुकूलन के कार्यों के ज़रएि, कर्ता के उद्देश्यों (या प्रणाली की ज़रुरतों) को असहनीय जोखमिों से बचाया नहीं जा सकता है।
क) अनुकूलन की कठोर सीमा – असहनीय जोखमिों से बचने के लिए कसिी तरह का अनुकूलन कार्य संभव नहीं होता है।
ख) अनुकूलन की नरम सीमा – वर्तमान में अनुकूलन कार्य के ज़रएि असहनीय जोखमिों से बचने के लिए कसिी तरह के वकिल्प उपलब्ध नहीं होते हैं।

AR5 WG2

अनुकूलनीय प्रशासन

यह प्रशासन के औपचारकि और अनौपचारकि संस्थाओं के क्रमकि-वकिास को दखिाने के लिए इन दनिों चलन में आ रही शब्दावली है। अनुकूलनीय प्रशासन नीतियों की योजना बनाने, इनका क्रयिान्वयन और मूल्यांकन करने में पुनरावृत्तीय तरीके से सामाजकि ज्ञानवर्धन को प्राथमकिता देता है ताकि प्राकृतकि संसाधनों, पारस्थितिकि तंत्र से संबंधति सेवाओं और प्राकृतकि संसाधनों के साझा समूह के इस्तेमाल और सुरक्षा को, खासतौर पर अनश्चितिता और जटलिता की स्थिति में, आगे बढ़ाया जा सके।

SR1.5

वायु-वलिय (एयरोसोल)

वायुवाहति ठोस या तरल कणों का नलिंबन, जो सामान्यत: कुछ नैनोमीटर से लेकर 10 µm आकार के होते हैं जो कई घंटों तक वातावरण में मौजूद रहते हैं। एयरोसोल शब्द में हवा में मौजूद कण और नलिंबति गैस दोनों शामलि हैं, का इस्तेमाल इस रपिोर्ट में अक्सर बहुवचन के रूप में, यानी एयरोसोल कणों के तौर पर कयिा गया है। एयरोसोल की उत्पत्ति, प्राकृतकि या मानवजनति दोनों

तरीके से हो सकती है। एयरोसोल जलवायु को कई तरह से प्रभावित कर सकते हैं: विकिरण फैलाकर और/या उन्हें अवशोषित करके परस्परक्रियाओं के माध्यम से और क्लाउड माइक्रोफ़िज़िक्स और क्लाउड के दूसरे गुणों के साथ परस्परक्रियाओं के माध्यम से, या फिर बर्फ या जमी हुई बर्फ से ढँकी सतहों पर जमा होकर, दोनों तरह से, और इस तरह उनके प्रकाशानुपात (ऐल्बीडो) में बदलाव करके और जलवायु प्रतिक्रिया में योगदान देकर।

SR1.5

वनरोपण

ऐसी भूमि पर नए जंगल तैयार करने के लिए पौधारोपण करना, जिनपर ऐतिहासिक रूप से जंगल नहीं थे। जंगल और इससे जुड़े शब्दों जैसे वनरोपण, पुनर्वनीकरण, और वन-कटाई के बारे में ज़्यादा जानने के लिए, भूमि उपयोग, भूमि उपयोग में परिवर्तन, और वानिकी पर आईपीसीसी (IPCC) की तैयार गई विशेष रिपोर्ट (IPCC, 2000b) देखें।

AR5 SYR

वायु प्रदूषण

इसमें प्राकृतिक प्रक्रियाओं या मानवीय गतिविधि के कारण वायु की गुणवत्ता खराब होती है और इसके नकारात्मक प्रभावों से मनुष्य के स्वास्थ्य या प्राकृतिक अथवा निर्मित पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। साथ ही, वायुमंडल में मौजूद पदार्थों (कई प्रकार के गैस, एयारोसोल) पर भी इसका असर पड़ता है, जिनका प्रत्यक्ष (पहले चरण के प्रदूषण फ़ैलाने वाले तत्व) या अप्रत्यक्ष (द्वितीय चरण के प्रदूषण फ़ैलाने वाले तत्व) हानिकारक प्रभाव होता है।

SR1.5

प्रकाशानुपात (ऐल्बीडो)

सूर्य की रेडियेशन का एक अंश, जो किसी सतह या वस्तु से टकराकर परावर्तित हो जाता है, इसे अक्सर प्रतिशत के तौर पर दर्शाया जाता है। बर्फ़ से ढकी सतह पर ऐल्बीडो बहुत ज़्यादा होता है, जबकि जमीन के विभिन्न भागों में ऐल्बीडो का स्तर अधिक से कम होता है। उदाहरण के लिए, वनस्पतियों से ढकी सतह और समुद्रों का ऐल्बीडो कम होता है. पृथ्वी का प्लेनेटरी ऐल्बीडो, बादलों की अलग-अलग सघनता, बर्फ़, जमी हुई सख्त बर्फ़, हरियाली वाले क्षेत्र और ज़मीन को ढकने की विविधता के अनुसार अलग-अलग होता है।

AR5 SYR

एंथ्रोपोसीन

एन्थ्रोपोसीन' शब्द एक नए प्रस्तावित भूवैज्ञानिक युग के लिए है, जिसमें मानवीय गतिविधियों के कारण जलवायु प्रणाली के साथ ही पृथ्वी प्रणाली (अर्थ सिस्टिम) की संरचना और कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव होते हैं। सबसे पहले, इस शब्द का प्रयोग सन 2000 में अर्थ सिस्टिम साइंस कम्यूनिटी में किया गया। प्रस्तावित नया युग, स्ट्रैटिग्रॉफिक साक्ष्यों के आधार पर औपचारिक मान्यता की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए भूवैज्ञानिक समुदाय के बीच रखा गया है। मानवीय गतिविधियों ने अपनी उपस्थिति के साथ ही भूवैज्ञानिक जमाव की सीमा को बढ़ाकर अर्थ सिस्टिम को बदल दिया है। यह होलोसीन युग के लोगों से अलग है, जिससे यह भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड में बना रहेगा.

SR1.5

मानवजनित (एंथ्रोपोजेनिक)

मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप या उससे उत्पन्न।

SR1.5

मानवजनित उत्सर्जन

मानवीय गतिविधियों के कारण होने वाला ग्रीनहाऊस गैस का उत्सर्जन, ग्रीनहाऊस गैस से पहले के उत्सर्जन और एयरोसोल का उत्सर्जन। इनमें जीवाश्म ईंधन को जलाना और वनों की कटाई, भूमि के उपयोग में परिवर्तन, मवेशियों का उत्पादन, खाद डालना, कचरा प्रबंधन और उद्योगों से जुड़ी प्रक्रियाओं जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

AR5 WG2

एंथ्रोपोजेनिक रिमूवल

सोच-समझकर की गई मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप, वातावरण से ग्रीनहाउस गैसों में होने वाली कमी को एंथ्रोपोजेनिक रिमूवल कहते हैं। इन गतिविधियों में, CO2 के बायोलॉजिकल सिंक को बेहतर बनाना और कैमिकल इंजीनियरिंग के ज़रिए लंबे समय के लिए इन गैसों को समाप्त करना और इन्हें स्टोर करना शामिल है। औद्योगिक और ऊर्जा से संबंधित स्रोतों से कार्बन को कैप्चर करने और स्टोर करने मात्र से ही वातावरण से CO2 को खत्म नहीं किया जा सकता, लेकिन अगर इसे बायोएनर्जी उत्पादन (BECCS) के साथ जोड़ दिया जाता है, तो इससे वातावरण से CO2 को कम किया जा सकता है।

SR1.5

बेसलाइन/संदर्भ

किसी भी बदलाव का माप बेसलाइन (या संदर्भ) वाली स्थिति से किया जाता है। बेसलाइन अवधि वह समय सीमा होती है, जिसकी तुलना में विसंगतियों को मापा जाता है। किसी ट्रेस गैस की बेसलाइन सांद्रता की माप वह होता है जो किसी ऐसे स्थान पर किया जाता है, जो स्थानीय मानवजनित उत्सर्जन से प्रभावित नहीं हुआ हो।

AR5 WG1

जैव-विविधिता

यह किसी स्थलीय क्षेत्र, समुद्रीय इलाकों या दूसरे पारस्थितिकी तंत्रों में रहने वाले जीवों के बीच मौजूद विविधिता होती है। जैव-विविधिता में आनुवंशिक, प्रजातीय और पारस्थितिकी तंत्र की विविधिता शामिल होती है।

AR5 SYR

बायोफ़्यूल

यह ऐसा ईंधन होता है, जो बायोमास से बनता है और आम तौर पर तरल रूप में रहता है। वर्तमान में, गन्ने या मक्का से बनने वाला बायोएथेनॉल, कैनोलाया सोयाबीन से बनने वाले बायोडीजल और पेपर मैनूफ़ैक्चरिंग की प्रक्रिया से बनने वाले ब्लैक लिकर बायोफ़्यूल में शामिल हैं।

SR1.5

काम ज़ारी रहेगा (बिज़िनेस ऐज़ यूज़वल- बीएयू)

बिज़िनेस ऐज़ यूज़वल का अनुमान इस पूर्वानुमान पर आधारित होता है कि प्रचालन संबंधी कार्य-अभ्यास और नीतियाँ भविष्य में भी वैसी ही रहें जैसी आज हैं। हालाँकि, बेसलाइन परिदृश्य में बीएयू (BAU) परिदृश्य की कुछ खास चीज़ों को शामिल कर सकते हैं (जैसे किसी खास तकनीकी पर प्रतिबंध), लेकिन BAU परिदृश्यों का मतलब है कि नीतियाँ और कार्य-अभ्यास वर्तमान में जैसी हैं आगे भी वैसी ही रहें।

AR5 WG2

कैनकून समझौता

युनाइटेड नेशंस फ़्रेमवर्क कंवेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC) के कांफ़्रेंस ऑफ़ पार्टिज (COP) के 16वें सत्र में कई निर्णय लिए गए। इनमें अन्य के अलावा ये निर्णय शामिल थे: नया ग्रीन क्लाइमेट फ़ंड (GCF) स्थापित किया जाए, नया तकनीकी तंत्र स्थापित किया जाए, अनुकूलन पर बातचीत की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाए, मिटिगिशन कमेटी को रिपोर्ट करने के लिए एक औपचारिक प्रक्रिया तैयार करना, वैश्विक औसत सतह तापमान वृद्धि को 2°C के अंदर रखने का लक्ष्य और शमन के प्रयासों के लिए अंतराष्ट्रीय सहयोग पा रहे देशों के लिए एमआरवी (MRV) मॉनिटरिंग, रिपोर्टिंग और वेरिफ़िकेशन पर समझौता।

AR5 SYR

क्षमता

किसी व्यक्ति, समुदाय, समाज या संस्था की समग्र ताकतों, खूबियों और संसाधनों को संयोजन जिसका इस्तेमाल तय किए गए लक्ष्यों को पाने के लिए किया जा सकता है।

SREX

क्षमता वृद्धि

बदलाव का सामना करने में सक्षम बनाने के लिए, किसी व्यक्ति, समुदाय, समाज या संस्था की शक्तियों, खूबियों और उनके पास उपलब्ध संसाधनों को बढ़ाने के काम।

AR5 WG2

कार्बन च्रक

इस शब्द का इस्तेमाल वायुमंडल, समुद्र, स्थलीय इलाकों, समुद्री जीवमंडल और स्थलमंडल के माध्यम से होने वाले कार्बन प्रवाह (विभिन्न रूपों में जैसे कि कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) के रूप में) का वर्णन करने के किए किया जाता है।

AR5 SYR

कार्बन डाइऑक्साइड कैप्चर और स्टोरेज (CCS)

एक ऐसी प्रक्रिया, जिसमें औद्योगिक और ऊर्जा से जुड़े स्रोतों से कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) की एक अपेक्षाकृत शुद्ध धारा को अलग (इकट्ठा) किया जाता है, वातानुकूलित करके संपीडित किया जाता है और फिर इसे भंडारण करने वाली जगह पर लंबे समय के लिए वायुमंडल से अलग करके रखा जाता है। इस प्रक्रिया को कभी-कभी कार्बन कैप्चर और स्टोरेज भी कहते हैं।

SR1.5

कार्बन टैक्स

यह जीवाश्म ईंधनों में मौजूद कार्बन वाली सामग्री पर एक प्रकार का शुल्क है। चूँकि, जीवाश्म ईंधन में मौजूद लगभग सारा कार्बन आखिरकार कार्बन डाइऑक्साइड के रूप में बाहर निकलता है, इसलिए कार्बन टैक्स उस जीवाश्म ईंधन से होने वाले CO_2 के उत्सर्जन पर उत्सर्जन टैक्स के लगभग बराबर होता है।

AR5 SYR

स्वच्छ विकास तंत्र (CDM)

इसकी परिभाषा लंबी, उलझी हुई और अस्पष्ट है. इसलिए, मैं ‘Annex-1’,’Annex- II’ देशों जैसे शब्दों का इस्तेमाल करने का सुझाव दूँगा/दूँगी, जो जलवायु परिवर्तन की व्याख्या करने के लिए ज़्यादा उत्सर्जन करने वाले ‘विकसित’ देशों और अन्य देशों के लिए इस्तेमाल होने वाले तकनीकी शब्द हैं।

SR1.5

जलवायु

जलवायु को संकीर्ण रूप से आम तौर पर सामान्य मौसम के रूप में या अधिक सख्ती के साथ कहा जाए तो हजारों महीने या लाखों साल की समय सीमा में प्रासंगिक मात्रा में परिवर्तनशीलता और सांख्यिकीय विवरण के तौर पर परिभाषित किया जाता है। वर्ल्ड मीटीऑरलाजिकल ऑर्गनज़ैशन द्वारा निर्धारित इन चारों की अवधि 30 वर्ष है। अधिकतर प्रासंगिक मात्राओं का मतलब सतह पर बदलने वाली चीज़ों से होता है, जैसे कि तापमान, बारिश और हवा। व्यापक अर्थ में, जलवायु, जलवायु तंत्र की एक स्थिति है, जिसमें सांख्यिकीय आंकड़े भी शामिल रहते हैं।

SR1.5

जलवायु परिवर्तन

जलवायु की स्थिति में होने वाले बदलाव को जलवायु परिवर्तन कहते हैं, जिसे औसत या सामान्य स्थिति में होने वाले बदलावों और/या इसकी विशेषताओं की परिवर्तनशीलता के ज़रिए (उदाहरण के तौर पर सांख्यिकीय परीक्षणों से) पहचाना जा सकता है। आम तौर पर, ये बदलाव दशकों तक या इससे ज़्यादा समय में होते रहते हैं। जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक अंदरूनी प्रक्रियाओं या बाहरी दबावों के कारण हो सकते हैं जैसे सूर्य के चक्रों में बदलाव , ज्वालामुखी विस्फोट और वातावरण या भूमि के उपयोग बनावट में लगता मानवजनित बदलाव।
ध्यान दें, फ़्रेमवर्क कंवेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC), के अनुच्छेद 1 में जलवायु परिवर्तन की यह परिभाषा है: “” जलवायु में बदलाव जोकि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर मानवीय गतिविधियों के कारण हो और जो वैश्विक वातावरण की बनावट को बदले और जो एक समय सीमा में तुलनात्मक तौर पर प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता के अतिरिक्त के हो। इस प्रकार UNFCCC वायुमंडलीय संरचना में फेरबदल करने वाली मानव गतिविधियों और प्राकृतिक कारणों के कारण जलवायु परिवर्तनशीलता के कारण जलवायु परिवर्तन के बीच अंतर करता है।

AR5 WG2

जलवायु प्रतिक्रिया

ऐसी परस्परक्रिया जिससे किसी एक जलवायु में होने वाली गड़बड़ी की मात्रा, किसी दूसरे जलवायु में बदलाव लाती है और फिर इस दूसरे जलवायु में हुए बदलाव के कारण पहले वाले जलवायु में अतिरिक्त बदलाव आते हैं। नकारात्मक प्रतिक्रिया वह होती है, जिसमें शुरुआती गड़बड़ी के कारण हुए बदलाव उसे ही कमज़ोर बना देते हैं। सकारात्मक प्रतिक्रिया में शुरुआती गड़बड़ी के कारण हुए बदलावों से वह और ज़्यादा बढ़ जाती है। यह शुरुआती गड़बड़ी या तो बाहरी रूप से पैदा की जाती है या फिर आंतरिक परिवर्तनशीलता के अंग के रूप में पैदा होती है।

SR1.5

जलवायु वित्त

जलवायु वित्त की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। जलवायु वित्त यह शब्दावली वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए समर्पित वित्तीय संसाधनों और विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने में सहायता के लिए वित्तीय प्रवाह, दोनों पर लागू होती है। साहित्य में इन श्रेणियों की और कई अवधारणाएँ भी शामिल हैं।

AR5 SYR

जलवायु प्रशासन

जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले नुकसानों को रोकने, कम करने, या इन्हें अपनाने की दिशा में आगे बढ़ाने के उद्देश्य से सामाजिक अर्थपूर्ण प्रणालियाँ और उपाय (जैगर्स और स्ट्रिप्पल, 2003 Stripple, 2003)।

SR1.5

जलवायु न्याय

ऐसा न्याय, जो जलवायु परिवर्तन को देखते हुए विकास और मानवाधिकारों को पाने के लिए मानव केंद्रित सामाधान पेश करे, सबसे ज़्यादा प्रभावित लोगों को सुरक्षा दे और जलवायु परिवर्तन के फ़ायदों और नुकसानों को साझा करें और इसके प्रभावों को समान और निष्पक्ष रखे। यह परिभाषा मैरी रॉबिन्सिन फ़ाउंडेशन - क्लाइमेट जस्टिस (MRFCJ, 2018) द्वारा प्रयुक्त परिभाषा से प्रेरित है।

SR1.5

जलवायु मॉडल

जलवायु का मॉडल, जलवायु तंत्र को उसके अवयवों की भौतिक, रसायनिक और जैविक विशेषताओं, उनकी पारस्परक्रियाओं और फ़ीडबैक की प्रक्रियाओं के आधार पर और जलवायु तंत्र की

कुछ ज्ञात विशेषताओं के आंकड़ों के रूप में पेश करता है।
जलवायु तंत्र को कई प्रकार के जटिल मॉडलों के माध्यम से दर्शाया जा सकता है; यानी किसी मॉडल के अनुक्रम या वर्णक्रम के किसी भी एक तत्व या तत्वों के समूह को पहचाना जा सकता है। जलवायु के मॉडल का प्रयोग जलवायु की अनुरूपता बनाने और अध्ययन के लिए एक रिसर्च टूल के तौर पर और मासिक, मौसमी और वर्षों के बीच जलवायु का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता है।

SR1.5

जलवायु समुत्थान शक्तिपूर्ण (रिज़िलियन्ट) विकास मार्ग

ऐसे मार्ग जो सतत विकास और गरीबी को मिटाने और असमानताओं को कम करने के प्रयासों को मजबूती देते हैं, बदलती जलवायु में उचित और सभी पैमानों पर अनुकूलन और समुत्थान शक्ति को बढ़ावा देते हुये।
वे वैश्विक ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग) (जैसे, 1.5 डिग्री सेल्सियस तक) को सीमित करने के लिए उत्सर्जन को काफी कम करने के लिए आवश्यक गहन सामाजिक परिवर्तन की नैतिकता, समानता और व्यवहार्यता पहलुओं को बढ़ाते हैं और सभी के लिए वांछनीय और रहने योग्य भविष्य और खुशहाली प्राप्त करते हैं।

SR1.5

जलवायु प्रक्षेपण (प्रोजेक्शन)

जलवायु प्रोजेक्शन, भविष्य के उत्सर्जन या ग्रीनहाउस गैसों और एयरोसोल की एकाग्रता के परिदृश्य के लिए जलवायु प्रणाली की कृत्रिम (सिम्युलेटेड) प्रतिक्रिया है, जो आम तौर पर जलवायु मॉडल का उपयोग करके प्राप्त की जाती है। जलवायु प्रोजेक्शन, जलवायु पूर्वानुमानों से बेहतर होते हैं, क्योंकि ये उत्सर्जन, संकेन्द्रण, रेडियोएक्टिव फोरसिंग के उपयोग किए गए परिदृश्य पर निर्भर रहते हैं, जो आगे सबंधित पूर्वानुमानों, उदाहरण के लिए, भविष्य में होने वाले सामाजिक आर्थिक और तकनीकी विकास जो साकार हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं - पर आधारित होते हैं।

AR5 WG2

जलवायु परिदृश्य

यह भविष्य में जलवायु की स्थिति को दर्शाने वाली एक तर्कसंगत और आसान प्रस्तुति है, जो उन जलवायु-शास्त्रीय संबंधों के आंतरिक रूप से संगत समुच्चय पर आधारित होती है, जिन्हें मानवीय विकास के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के संभावित परिणामों की जांच में इस्तेमाल करने के लिए निर्मित किया गया है और जो अक्सर इम्पैक्ट मॉडल्स के इनपुट के रूप में कार्य करते हैं। जलवायु संबंधी प्रोजेक्शंस अक्सर जलवायु के परिदृश्यों का निर्माण करने के लिए कच्चे माल के रूप में काम करते हैं, लेकिन जलवायु के परिदृश्य निर्मित करने के लिए आम तौर पर कुछ अतिरिक्त जानकारी की आवश्यकता भी होती है, जैसे कि ध्यान से देखा गया वर्तमान वातावरण।

AR5 WG2

जलवायु सेवाएँ

जलवायु सेवाओं से आशय उन जानकारी और उत्पादों से है, जो जलवायु परिवर्तनशीलता या जलवायु परिवर्तन से पड़ने वाले प्रभाव के बारे में उपयोगकर्ता की जानकारी और समझ को बढ़ाते हैं, ताकि संस्थागत या व्यक्तिगत तौर पर निर्णय लेने में सहायता मिले और तैयारी तथा जल्दी जलवायु परिवर्तन पर शुरू में ही कार्यवाही करने में सक्षम हों। इन उत्पादों में जलवायु डेटा की जानकारी शामिल हो सकती है।

SR1.5

जलवायु स्मार्ट कृषि (क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर - CSA)

जलवायु स्मार्ट कृषि (CSA) एक ऐसा दृष्टिकोण है जो कृषि प्रणालियों को प्रभावी ढंग से विकास का समर्थन करने और बदलती जलवायु में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कार्यों का मार्गदर्शन करने में मदद करता है। CSA का उद्देश्य तीन मुख्य उद्देश्यों का सामना करना है: कृषि उत्पादकता और आय में लगातार वृद्धि करना, जलवायु परिवर्तन के लिए समुत्थान शक्ति को अनुकूलित और निर्माण करना, और जहाँ संभव हो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना और/या हटाना (एफएओ, 2018)

SR1.5

जलवायु का तंत्र

जलवायु तंत्र बहुत ही जटिल तंत्र हैं, जो मुख्य रूप से पाँच हिस्सों से बना होता हैं: वातावरण, जल-मंडल (हाइड्रोस्फीयर), हिममण्डल (क्रायोस्फीयर) , स्थल-मंडल (लिथोस्फीयर), जीव-मंडल (बायोस्फीयर) और इनके बीच परसपरक्रिया से बनता है। जलवायु तंत्र समय के साथ अपने आंतरिक गतिशीलता के प्रभाव से और बाहरी दबावों के कारण विकसित होता है जैसे ज्वालामुखी विस्फ़ोट, सूर्य की करिणों में बदलाव और मानवजनित दवाबों जैसे वातावरण की बनावट और भूमि के उपयोग में बदलाव के कारण।

AR5 WG2

जलवायु लक्ष्य

'जलवायु लक्ष्य' का मतलब तापमान की सीमा,संकेंद्रण का स्तर या उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य का भविष्य में जलवायु तंत्र में होने वाले खतरनाक मानवजनति हस्तक्षेप से बचने के लएि प्रयोग करना है। उदाहरण के लएि, राष्ट्रीय जलवायु लक्ष्य एक नश्चिति समय क्षतिजि पर नश्चिति मात्र से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने का लक्ष्य रख सकते हैं, उदाहरण के लएि जो क्योटो प्रोटोकॉल के तहत हैं।

SR1.5

सह-लाभ

कसिी एक उद्देश्य पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लएि जो नीत तियार की गई या जो कदम उठाया गया, उसका प्रभाव अन्य उद्देश्यों पर भी पड़ सकता है, फरि सकल सामाजकि कल्याण पर उसका कुल प्रभाव चाहे जो भी हो।
सह-लाभ अक्सर अनश्चिति होते हैं और अन्य कारकों के आलावा यह स्थानीय परस्थितियिों और कार्यान्वयन के उपयोग पर नर्भिर करता है। सह-लाभों को सहायक लाभ भी कहा जाता है।

AR5 WG2

समुदाय-आधारति अनुकूलन

यह स्थानीय, समुदाय आधारति अनुकूलन है। समुदाय-आधारति अनुकूलन समुदायों की अनुकूलन क्षमता को बढ़ाने के लएि उनको सशक्त बनाने और प्रोत्साहति करने पर ध्यान केंद्रति करता है। यह ऐसा दृष्टकोिण है जो समुदाय को सशक्त करने लएि उनके संदर्भ, संस्कृति, ज्ञान, शक्ति और प्राथमकिताओं को उनकी ताकतों के रूप में लेता है।

AR5 WG2

सांस्कृतकि प्रभाव

यह संस्कृति के वभिन्नि पहलुओं पर पड़ने वाला भौतकि और पारस्थितिकि प्रभाव होता है। साथ ही, इसमें संस्कृति के जीवंत अनुभवों के कई आयाम शामलि होते हैं जैसे पहचान, सामुदायकि एकजुटता और संबंध, जगह की समझ, वैश्वकि स्तर, मूल्य, धारणा और परंपरा। सांस्कृतकि प्रभावों का पारस्थितिकि प्रभावों के साथ, खासकर प्रजातयिों और भौगोलकि इलाकों के प्रमुख और प्रतनिधिकिारी आयामों के साथ, गहरा संबंध होता है। संस्कृति और सांस्कृतकि प्रथाएँ बदलाव के प्रभावों महत्वपूर्णता और मूल्य तय करती हैं, अनुकूलन के वकिल्पों की व्यवहार्यता और स्वीकृति को आकार देती हैं और अनुकूलन को सक्षम करने वाली कुशलताएँ और अभ्यास उपलब्ध कराती हैं।

AR5 WG2

जलवायु परवर्तिनशीलता

जलवायु की परवर्तिनशीलता का मतलब सभी तरह की स्थानीय और अस्थायी मौसम की घटनाओं से भन्नि जलवायु की सामान्य स्थति और दूसरे आंकड़ों (जैसे- मानक वचिलन, तेजी से मौसम बदलना, आदि.) में बदलाव होना है। जलवायु तंत्र के अंदर होने वाले बदलाव सामान्य प्राकृतकि प्रक्रयिा के कारण हो सकते हैं (आंतरकि परवर्तिनशीलता) या प्राकृतकि या मानवजनति बाहरी दबाव के कारण बदलाव हो सकते हैं।

SR1.5

"कान्फ्रेंस ऑफ़ द पार्टीज़ (COP)

यूएन कंवेंशन की सर्वोच्च संस्था, जैसे यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कंवेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UN-FCCC), में वोट डालने के अधकिार के साथ ही देशों के बीच कंवेंशन को स्वीकार कयिा गया और मान्यता दे गयी। ज़्यादा जानने के लएि यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कंवेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNF-CCC) देखें।

SR1.5

सामान्य लेकनि वभिेदति जम्मिेदारयिाँ (CBDR)

जलवायु परवर्तन से नपिटने के लएि वभिन्नि देशों की अलग-अलग क्षमताओं और ज़म्मिेदारयिों को पहचानने वाले संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन इन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC) में सामान्य लेकनि वभिेदति ज़म्मिेदारयिाँ और हल करने क्षमताएँ (CBDR–RC) एक मुख्य सद्धिांत है। अधवििशन में कहा गया है: "... जलवायु परवर्तन की वैश्वकि प्रकृति सभी देशों द्वारा व्यापक हर संभव सहयोग के लएि और एक प्रभावी और उपयुक्त अंतरराष्ट्रीय ज़म्मिेदारी में उनकी भागीदारी तय करने के लएि, उनकी सामान्य लेकनि अलग-अलग ज़म्मिेदारयिों और संबंधति क्षमताओं और उनकी सामाजकि और आर्थकि स्थतियिों के अनुसार होती है।" तभी से सीबीडीआर-आरसी (CBDR-RC) सद्धिांत ने यूएन की जलवायु वार्ताओं का मार्गदर्शन कयिा है।

SR1.5

वकिार्बनन (डकिार्बोनाइजेशन)

यह वह प्रक्रयिा है, जसिके ज़रएि देश या अन्य संस्थाओं का उद्देश्य कम कार्बन वाली अर्थव्यवस्था प्राप्त करना होता है, या जसिके द्वारा वैयक्तकिों का उद्देश्य उनकी कार्बन की खपत को कम करना होता है।

SR1.5

वियुग्मन (डीकपलिंग)

वियुग्मन (जलवायु परिवर्तन के संबंध में) वहाँ होता है जहां आर्थिक प्रगति जीवाश्म ईंधन की खपत के साथ पूरी तरह से जुड़ी नहीं होती है। सापेक्षिक युग्मन वहाँ होता है जहाँ दोनों बढ़ते हैं लेकिन अलग-अलग दर से। पूर्ण वियुग्मन वहाँ होता है जहाँ आर्थिक विकास होता है लेकिन जीवाश्म ईंधन घटता है।

SR1.5

वन-कटाई

जंगल से जंगल न होने में बदलना।

SR1.5

आपदा

खतरनाक भौतिक घटनाओं के कारण किसी समुदाय या समाज के सामान्य जीवन में गंभीर परिवर्तन आ जाना। ये घटनाएँ संवेदनशील सामाजिक हालातों के साथ परस्परक्रिया करके व्यापक स्तर पर मानव, संपत्ति, आर्थिक व्यवस्था या पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। इस कारण से बुनियादी मानवीय ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आपातकालीन कार्य करने की आवश्यकता होती है और इसे संभालने के लिए बाहरी मदद की भी ज़रूरत पड़ सकती है।

AR5 WG1

आपदा प्रबंधन

विभिन्न संस्थाओं और सामाजिक स्तरों पर आपदा से बचाव की तैयारियाँ, इससे बचने के प्रयास और इसे कम करने की कोशिश के कार्यों को प्रोत्साहित करना या सुधार करने के लिए योजना बनाना, लागू करना और रणनीतियों, नीतियों और उपायों का मूल्यांकन करने की सामाजिक प्रक्रिया को आपदा प्रबंधन कहते हैं।

AR5 WG2

आपदा जोखिम

किसी खास समय सीमा में संभावना रहती है कि खतरनाक भौतिक घटनाओं के कारण किसी समुदाय या समाज के सामान्य जीवन में गंभीर परिवर्तन आ जाए। ये घटनाएँ संवेदनशील सामाजिक हालातों के साथ परस्परक्रिया करके व्यापक स्तर पर मानव, संपत्ति, आर्थिक व्यवस्था या पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। इस कारण से बुनियादी मानवीय ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आपातकालीन कार्य करने की आवश्यकता होती है और इसे संभालने के लिए बाहरी मदद की भी ज़रूरत पड़ सकती है।

SREX

आपदा जोखिम प्रबंधन (DRM)

आपदा जोखिम की समझ में सुधार करने, आपदा जोखिम में कमी और हस्तांतरण को बढ़ावा देने, और आपदा तैयारी, प्रतिक्रिया और बहाली के कार्यों में निरंतर सुधार को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों, नीतियों और उपायों को डिजाइन करने, लागू करने और मूल्यांकन करने की प्रक्रियाएं, मानव सुरक्षा, खुशहाली, जीवन की गुणवत्ता और सतत विकास को बढ़ाने के स्पष्ट उद्देश्य के साथ।

SREX

आपदा जोखिम न्यूनीकरण (DRR)

एक नीतिगत लक्ष्य या उद्देश्य और रणनीतिक और सहायक उपाय दोनों को दर्शाता है जिन्हें भविष्य में आपदा जोखिम की आशंका का अनुमान लगाने; मौजूदा एक्सपोजर, खतरा या संवेदनशीलता को कम करने; और समुत्थान शक्ति (रज़िलिीअन्स) में सुधार के लिए नियोजित किया जाता है।

SREX

सूखा

असामान्य सूखे मौसम का समय, जो इतने लंबे समय तक बना रहता है कि पानी से जुड़े (हाइड्रलॉजिकल) गंभीर असंतुलन का कारण बनता है। सूखा एक सापेक्षिक शब्द है; इसलिए बारिश में आई कमी से संबंधित किसी भी चर्चा को, बारिश से संबंधित उस खास गतिविधि जिसपर चर्चा हो रही है, का संदर्भ लेना चाहिए।
उदाहरण के लिए, फसलों के बढ़ने के मौसम में वर्षण की कमी के कारण, आम तौर पर फसलों का उत्पादन या पारिस्थितिकीय कार्य बाधित होता है (ज़मीन में नमी की मात्रा कम होने आ कारण, इसे कृषि सूखा भी कहते हैं) और अपवाह (रनऑफ़) और मानसून का सीजन प्रमुख रूप से जल आपूर्तियों को प्रभावित करता है (जल संबंधी सूखा)। भंडारण जमीन की नमी बादल जाता है और भूमिगत जल सामान्य वाष्पीकरण में वृद्धि के अतिरिक्त बारिश में कमी होने से प्रभावित होता है। किसी खास समय सीमा में असामान्य बारिश की कमी को जल संबंधी सूखा कहते हैं। अत्यधिक सूखा, बहुत लंबे समय और बड़े स्तर का सूखा होता है, जो सामान्य से ज़्यादा समय तक होता है और आम तौर पर एक दशक या इससे ज़्यादा समय तक का हो सकता है।

AR5 SYR

हानिकारक नवाचार

हानिकारक नवाचार का मतलब माँग के अनुसार तकनीकी बदलाव है, जिसके परिणामस्वरूप

प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव होते हैं और बहुत तेजी से वृद्धि होना इसकी विशेषता होती है।

SR1.5

पूर्व चेतावनी प्रणाली (EWS)

तकनीकी, आर्थिक और संस्थागत क्षमताएँ जिनकी ज़रूरत समय पर और अर्थपूर्ण चेतावनी की जानकारी से तैयार करने और पहुंचाने के लिए होती है ताकि आपदा से संकटग्रस्त व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं को नुकसान या हानि की संभावना कम करने के लिए तत्काल और उचित तरीके से कार्यवाही के लिए तैयार और सक्षम किया जा सके। संदर्भ के अनुसार EWS को स्थानीय या वैज्ञानिक जानकारी के आधार पर तैयार किया जा सकता है। EWS का इस्तेमाल परस्थिति संबंधी प्रयोग के लिए भी किया जाता है, उदाहरण के लिए, संरक्षण के क्षेत्र में, जहाँ संस्थाओं को खुद किसी खतरे की संभावना नहीं होती है, लेकिन पारस्थिति तंत्र को संरक्षण की ज़रूरत होती है (कोरल ब्लीचिंग अलर्ट, इसका उदाहरण है।), कृषि में, (उदाहरण के लिए, जमीन पर पड़ने वाले ठंढ या ओलावृष्टि की चेतावनी) और मछली पालन के क्षेत्र में (तूफान और सुमानी की चेतावनी देना)। इस शब्दावली को UNISDR (2009) और IPCC (2012a) में इस्तेमाल किए गए परिभाषाओं के आधार पर तैयार किया गया है।

SR1.5

पारस्थितिकी तंत्र

पारस्थितिकी तंत्र जीवित जीवों, उनके निर्जीव पर्यावरण और उनके अंदर और उनमें आपस में पारस्परिकक्रिया की एक क्रियाशील ईकाई है। दिए गए पारस्थितिकी तंत्र में कई हिस्से शामिल होते हैं और इनकी स्थानीय सीमाएँ इस उद्देश्य पर निर्भर करती हैं कि किसि पारस्थितिकी तंत्र को परिभाषित किया गया है: कुछ मामलों में अपेक्षाकृत काफी कुशल होते हैं, जबकि कुछ मामलों में छिन्न-भिन्न सुस्त होते हैं। पारस्थितिकी तंत्र की सीमाएं समय के साथ बदल सकती हैं। पारस्थितिकि तंत्र अन्य पारस्थितिकि तंत्रों में निहित हैं, और उनका पैमाना बहुत छोटे से लेकर पूरे जीवमंडल तक हो सकता है। वर्तमान युग में, अधिकांश पारस्थितिकी तंत्रों में या तो लोग प्रमुख जीवों के रूप में होते हैं, या उनके वातावरण में मानव गतिविधियों के प्रभाव से प्रभावित होते हैं।

AR5 WG1

पारस्थितिकी तंत्र पर आधारित अनुकूलन

जैव-विविधता और पारस्थितिकी तंत्र की सेवाओं का इस्तेमाल किसी समग्र अनुकूलन रणनीति के हिस्सा के रूप में करना ताकि जलवायु परिवर्तन के बुरे प्रभावों को अपनाने में लोगों की मदद मिल सके। पारस्थितिकी तंत्र पर आधारित अनुकूलन, स्थायी प्रबंधन, संरक्षण और पारस्थितिकी तंत्रों को फिर से सुधारने के विभिन्न अवसरों का इस्तेमाल करने का मौका देता है. साथ ही, ऐसी सेवाएँ उपलब्ध कराता है, जिससे लोग जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को अपनाने में सक्षम बन सकें। इसका उद्देश्य समुत्थान शक्ति को बनाए रखना और बढ़ाना और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के कारण पारस्थितिकि तंत्र और लोगों की कमजोरियों को कम करना है। पारस्थितिकी तंत्र-आधारित अनुकूलन व्यापक अनुकूलन और विकास रणनीतियों सबसे उपयुक्त रूप से एकीकृत है (CBD, 2009)।

AR5 WG2

पारस्थितिकी संबन्धित सेवाएँ

पारस्थितिकीय प्रक्रियाओं या कार्यों से लोगों या समाज के व्यापक हिस्से को आर्थिक या गैर-आर्थिक लाभ मिलते हैं। आम तौर पर, इन्हें इस तरह से वर्गीकृत किया जाता है (1) सहयोगी सेवाएँ, जैसे कि उत्पादकता या जैव-विविधता को बरकरार रखना, (2) प्रावधानिक सेवाएँ, जैसे कि भोजन, फ़ाइबर या मछली, (3) विनियामक सेवाएँ, जैसे कि जलवायु अधिनियम या कार्बन संचयन, और (4) सांस्कृतिक सेवाएँ, जैसे कि पर्यटन या आध्यात्मिक और सौंदर्य प्रशंसा।

AR5 WG2

अल नीनो-दक्षिणी दोलन (ENSO)

अल नीनो शब्द का इस्तेमाल शुरू में एक गर्म पानी के प्रवाह का वर्णन करने के लिए किया गया था, जो समय-समय पर इक्वाडोर और पेरू के तट के साथ बहता है, स्थानीय मत्स्य पालन को बाधित करता है। इसके बाद से डेटलाइन के पूर्व में उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर के बेसिन-वाइड वार्मिंग के साथ इसकी पहचान की गई है। यह महासागरीय घटना, वैश्विक स्तर के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय सतह पर दबाव के पैटर्न के उतार-चढ़ाव से जुड़ी हुई है, जिसे जिसे दक्षिणी दोलन कहा जाता है। एक-दूसरे से जुड़ी वातावरण-महासागर की यह घटना, आम तौर पर दो से सात साल के बीच घटित होती है, जिसे एल नीनो-दक्षिणी दोलन (ENSO) के रूप में जाना जाता है।अक्सर इसे तहिती और डार्विन की सतह के दबाव के अंतर के रूप में या मध्य और प्रशांत के पूर्वी इक्वेटोरियल में समुद्र की सतह के तापमान के रूप में मापा जाता है। ENSO के दौरान, चालू पूर्वी हवाएँ कमज़ोर हो जाती हैं, ऊपर उमड़ना कम हो जाता है और समुद्र की धाराएँ बदलने लगती हैं,

इससे समुद्र की सतह का तापमान गर्म हो जाता है, जो पूर्वी हवाओं को आगे और कमज़ोर करता है। इस घटना का उष्णकटिबंधीय प्रशांत के इलाके में हवाओं, सागर की सतह का तापमान और वर्षण के पैटर्न पर भारी प्रभाव पड़ता है। वैश्विक टेलीकनेक्शन के माध्यम से पूरे प्रशांत क्षेत्र और दुनिया के कई दूसरे इलाकों में इसका जलवायु पर प्रभाव पड़ता है। ENSO के सर्द चरण को ला नीना कहा जाता है।

AR5 SYR

अनपेक्षित जोखिम

ऐसा जोखिम, जो किसी जटिल तंत्र में परस्परक्रिया की घटना के कारण शुरू होता है। उदाहरण के लिए, जब जलवायु परिवर्तन के कारण मनुष्य की आबादी के भौगोलिक स्वरूप में बदलाव से उस क्षेत्र की आबादी की संवेदनशीलता और नुकसान का जोखिम बढ़ने के कारण जोखिम होता है।

AR5 WG2

उत्सर्जन परिदृश्य

रेडिएटिव रूप से सक्रिय (सूर्य की ऊर्जा को सक्रिय तरीके से अवशोषित या विकिरित करने वाले) पदार्थों (जैसे कि ग्रीनहाउस गैस, एयरोसोल) के उत्सर्जन में आगे चलकर होने वाली बढ़ोत्तरी का एक तर्कसंगत चित्रण। यह इन उत्सर्जनों की चालक शक्तियों (जैसे कि जिननांकीय और सामाजिक-आर्थिक विकास, प्रौद्योगिकीय बदलाव) और उनके प्रमुख संबंधों के बारे में स्पष्ट और आंतरिक रूप से अपरिवर्तनीय अनुमानों पर आधारित होता है। जलवायु संबंधी प्रोजेक्शंस की गणना करने के लिए, उत्सर्जन के परिदृश्यों से मिलने वाले सांद्रण के परिदृश्यों का उपयोग किसी जलवायु संबंधी मॉडल में इनपुट के रूप में किया जाता है।

AR5 WG2

उत्सर्जन व्यापार

यह बाजार पर आधारिक तरीका है, जिसका लक्ष्य प्रभावशाली तरीके से शमन का उद्देश्य पूरा करना है।
व्यापारिक उत्सर्जनों के लिए अलग-अलग परमिट को GHG उत्सर्जनों की सीमा या कैप कहते हैं, जो कि व्यापारिक योजना के अधिकार क्षेत्र के अंदर संस्थाओं को नीलामी और मुफ़्त भत्ते दोनों के जरिए दिए जाते हैं। संस्थाओं को अपने उत्सर्जनों की राशि के बराबर ही उत्सर्जनों के परमिट को सौंपने की आवश्यकता होती है(उदाहरण के लिए, टनों में CO2 देना होता है). कोई संस्था एक्ट्रा परमिट को किसी दूसरे संस्था को बेच सकती है, जो कि सस्ते तरीके से उतनी ही राशि के उत्सर्जन से बच सकता है। व्यापार योजनाएँ अंतरराष्ट्रीय, घरेलू और अंतर कंपनी के स्तर की हो सकती हैं (उदाहरण के लिए, क्योटो प्रोटोकॉल और EU-ETS की समुत्थान शक्ति प्रणाली के तहत) और कार्बन डाईआक्साईड, ग्रीनहाउस गैस और अन्य पदार्थों पर लागू होती हैं।

SR1.5

समर्थक स्थितियाँ

ऐसी स्थितियाँ, जो अनुकूलन और प्रभावों को कम करने वाले विकल्पों को प्रभावित करती हैं। यह प्रणालीगत बदलावों को माप और बढ़ा सकती हैं, जो तापमान वृद्धि को 1.5° सेंटीग्रेड तक सीमित करेंगी। साथ ही, सतत विकास प्राप्त करते हुये, गरीबी समाप्त करते हुये और गैर बराबरी को कम करते हुये जलवायु परिवर्तन से जुड़े हुए बदलावों को अपनाने के लिए समाज और तंत्र की क्षमता को बढ़ाएगी। ।

SR1.5

ऊर्जा पर पहुँच

उत्पादक सेवाओं और संचार व्यवस्था, जलाने, गर्म रखने और पकाने के काम के लिए स्वच्छ, भरोसेमंद और सस्ती ऊर्जा सेवाओं पर पहुँच।

AR5 SYR

ऊर्जा सुरक्षा

किसी दिए गए देश या सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय के रूप में लक्ष्य होता है, पर्याप्त, स्थिर और पूर्वानुमानित ऊर्जा आपूर्ति बनाए रखना। उपायों में प्रतिस्पर्धी और स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय ऊर्जा मांग को पूरा करने के लिए ऊर्जा संसाधनों की पर्याप्तता और ऊर्जा आपूर्ति की समुत्थान शक्ति की सुरक्षा करना; प्रौद्योगिकियों के विकास और तैनाती को सक्षम करना; ऊर्जा आपूर्ति उत्पन्न करने, स्टोर करने और संचारित करने और वितरण के प्रवर्तनीय अनुबंधों को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचे का निर्माण करना शामिल है।

AR5 SYR

समानता

यह एक सिद्धांत है, जो उत्पत्ति में भिन्नता होने के बावजूद, सभी मनुष्यों को बराबर मानता है, इसमें उनके लिए समान अवसरों, अधिकारों और दायित्वों को शामिल करता है। असमानता: इसमें अवसरों और सामाजिक हैसियत में गैरबराबरी होती है। साथ ही, योग्यता या अयोग्यता, उम्र,

जातीयता, वर्ग, जेंडर के आधार पर सामाज या समूह के अंदर अपनाए जाने वाली भेदभाव की प्रक्रयिा अक्सर असामान वकिास की देन होती है। असमान आय, देशों के बीच और देशों के अंदर ज़्यादा और कम कमाने वालों के बीच भेदभाव को दर्शाती है। ज़्यादा जानने के लिए समानता, नैतकिता और नष्पिक्षता के बदिु को देखें।

SR1.5

समता

समता बोझ साझाकरण में नष्पिक्षता का सद्धिांत है और यह समझने का एक आधार है कि लागत और लाभों सहति जलवायु परविर्तन के प्रभावों और प्रतक्रियिाओं को समाज में कम या अधकि समान तरीकों से कैसे वतिरति कयिा जाता है।
यह अक्सर समानता, नष्पिक्षता और न्याय के वचिारों से जुड़ा होता है। इसे समाज, पीढ़ियों और जेंडर के बीच जलवायु प्रभावों और नीतियों की ज़म्मिेदारी लेने, उनका वतिरण करने में लागू कयिा जाता है। और एक प्रकार से नर्यिण लेने की प्रक्रयिा में कौन हस्सिा लेता है और नयिंत्रण करता है, इसमें भी समता को लागू कयिा जाता है।
वतिरक समता: नीतियों या कार्यों में लाभ, लागत, नतीजों और परणिामों में समता होती है। जलवायु परविर्तन या जलवायु नीतियों के संबंध में वभिन्नि लोगों, जगहों और देशों में अनुकूलन और प्रभावों को कम करने के लिए लाभों और बोझ को बाँटने में समता का नयिम को शामलि होता है।
जेंडर समता: अधकिारों, संसाधनों और अवसरों में पुरूषों और स्त्रयिों की बराबरी को सुनश्चिति करना। जलवायु परविर्तन के संबंध में जेंडर समता का यह मानना है कि जलवायु परविर्तनों के प्रभावों के प्रति महलिाएँ ज़्यादा संवेदनशील होती हैं और जलवायु नीति की प्रक्रयिा और परणिामों में उन्हें नुकसान हो सकता है। दो पीढयिों में समता : पीढयिों के बीच समता, यह स्वीकार करती है कि अतीत और वर्तमान के उत्सर्जनों के प्रभाव, संवेदनशीलताएँ और नीतियाँ भवष्यि में लोगों पर और वभिन्नि आयु समूहों पर लागतों और लाभों को लागू करती हैं।

SR1.5

एक्सपोज़र

स्थानों और परविशों में लोगों, आजीवकिाओं, प्रजातयिों या पारस्थितिकिी तंत्रों, पर्यावरणीय कार्यों, सेवाओं और स्रोतों, ढांचागत संरचना या आर्थकि, सामाजकि या सांस्कृतकि धरोहरों की उपस्थिति जो बुरी तरह से प्रभावति हो सकती है।

AR5 WG2

बाहरी चीज़ें/ बाहरी लागतें / बाहरी लाभ

मानवीय गतविधि के कारण बाहरी चीज़ें तब पैदा होटी हैं, जब इन गतविधियिों के लिए ज़म्मिेदार ताक़तें दूसरे लोगों के उत्पादन और खपत की संभावनाओं पर अपनी गतविधियिों के कारण पड़ने वाले प्रभावों की पूरी ज़म्मिेदारी नहीं लेते हैं, और इस तरह के प्रभावों की क्षतपिूर्ति करना संभव नहीं होता है। जब ये प्रभाव नकारात्मक होते हैं, तब वे बाहरी लागत कहलाते हैं। जब ये प्रभाव सकारात्मक होते हैं, तब वे बाहरी लाभ कहलाते हैं।

AR5 WG2

चरम मौसम घटना

वर्ष के कसिी समय और वशिष स्थान पर दुर्लभ रूप से होने वाली घटना को चरम मौसम घटना कहते हैं। दुर्लभ की व्याख्या अलग-अलग हो सकती है, लेकनि मौसम की कोई चरम घटना वो होगी जो सामान्यत: दुर्लभ होगी या पहले देखे गए अनुमानति संभावना घनत्व फलां के 10 वें या 90 वें प्रतशित की तुलना में दुर्लभ होगी। परभिाषा के अनुसार, इसकी मूल प्रकृति में एक जगह से दूसरी जगह के चरम मौसम में पूरी तरह से अंतर हो सकता है। जब कसिी चरम मौसम का पैटर्न कुछ समय के लिए बना रहता है, जैसे की कोई ऋतु, तो इसे चरम जलवायु की घटना के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं, खास तौर पर जब इसका औरसत या कुल प्रभाव स्वयं ही चरम हो (उदाहरण के लिए, कसिी खास ऋतु में सूखा या भारी बारशि)।

AR5 WG2

बाढ़

कसिी पानी के स्रोत या जलधारा का सामान्य सीमा से ज़्यादा भर जाना या जो सामान्य तौर पर डूबता नहीं है, उस इलाके में पानी के जमा होने को बाढ़ कहते हैं। बाढ़ में नदी (नदी से संबंधति) बाढ़, तीव्र बाढ़, शहरी बाढ़, बरसाती बाढ़, सीवर की बाढ़, तटीय इलाकों की बाढ़ और हमिनद झील फस्फिोट बाढ़ शामलि हैं।

AR5 SYR

खाद्य सुरक्षा

जब लोग स्वस्थ और सक्रयि जीवन और सामान्य वकिास के लिए पौष्टकि और उचति भोजन पर्याप्त मात्रा में सुरक्षति तरीके से पाते हैं तो ऐसी स्थिति को खाद्य सुरक्षा कहते हैं।

AR5 SYR

जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन

पृथ्वी में जमा जीवाश्म कार्बन जैसे तेल, गैस या कोयला को जलाने से ग्रीनहाउस गैस (खास तौर पर

कार्बन डाईआक्साईड), ट्रैस गैस और एयरोसोल का उत्सर्जन होता है, इसे जीवाश्म ईंधन का उत्सर्जन कहते हैं।

AR5 WG1

ईंधन की कमी (फ्युल पावर्टी)

एक ऐसी अवस्था, जिसमें किसी परिवार को निश्चित स्तर के घरेलू ईंधन के उपयोग (खास तौर पर ताप) की गारंटी नहीं होती है या इन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अनिश्चित खर्च का भार सहना पड़ता है।

AR5 SYR

व्यवहार्यता

जलवायु संबंधी लक्ष्य और प्रतिक्रिया के विकल्प जिस सीमा या स्तर तक पूरे करने संभव हैं और/या वांछित हैं, उसे ही व्यवहार्यता कहते हैं। यह बदलाव की भू-भौतिकीय, पारिस्थितिकीय,तकनीकी, आर्थिक, सामाजिक और संस्थागत स्थितियों पर निर्भर करती है। व्यवहार्यता को समर्थन देने वाली स्थितियाँ परिवर्तनशील होती हैं और स्थान के अनुसार बदलती रहती हैं और विभिन्न समूहों के बीच भी इन स्थितियों में अंतर हो सकता है। समर्थक स्थितियाँ भी देखें।

SR1.5

भू-तकनीकी इंजीनियरिंग (जियोइंजीनियरिंग)

जियोइंजीनियरिंग का अर्थ, तरीकों और प्रौद्योगिकियों के एक व्यापक समूह से है जिसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए जलवायु प्रणाली में जानबूझकर परिवर्तन करना है। सभी तो नहीं, लेकिन अधिकतर मामलों में या तो (1) जलवायु तंत्र में से सोख लिए गए सूर्य की ऊर्जा की मात्रा को कम करने (सोलर रेडिएशन मैनेजमेंट के ज़रिए) या फिर (2) जलवायु बदलने के लिए, वातावरण में पर्याप्त मात्रा में शुद्ध कार्बन सिंक को बढ़ाने (कार्बन डाईआक्साईड को कम करके) के तरीकों का प्रयास होता है। इसमें सबसे ज़रूरी होती है मात्रा और इरादा। इस विशेष काम के लिए जियोइंजीनियरिंग विधि की दो मुख्य विशेषताएँ होती हैं, वे जलवायु तंत्र (उदाहरण के लिए, वातावरण, जमीन या सागर) का वैश्विक या स्थानीय इस्तेमाल करते हैं या इसे बदलते हैं
और/या देशों की सीमाओं के पार भी अनायास ही इनका मौलिक प्रभाव हो सकता है।

AR5 WG1

भूमंडलीय ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग)

वैश्विक तौर पर सतह के औसत तापमान (GMST) में अनुमानित वृद्धि की गणना 30 साल की अवधि में की जाती है या किसी विशेष साल या दशक पर केंद्रित 30 साल की अवधि के हिसाब से इसकी गणना की जाती है, जिसे औद्योगीकरण से पहले के स्तरों के सापेक्ष व्यक्त किया जाता है, जब तक कि इस संबंध में किसी अन्य प्रकार से कोई विशेष निर्देश न दिया गया हो। अतीत और भविष्य में फैली इन 30 साल की अवधियों के संदर्भ में, यह माना गया है कि वर्तमान दशकों में तापमान में बढ़ोत्तरी का रुझान जारी है।

SR1.5

शासन (गवर्नेंस)

राष्ट्र-राज्य द्वारा परिभाषित सरकार की सीमित परिभाषा से अलग, शासन की एक ऐसी अवधारणा है जो ज़्यादा समावेशी है और जिसमें सरकार के विभिन्न स्तरों (वैश्विक, अंतरराष्ट्रीय, क्षेत्रीय, स्थानीय) के योगदानों को मान्यता दी जाती है और साथ ही निजी क्षेत्र, गैर सरकारी संगठनों और नागरिक समाज की भूमिका व योगदानों को मान्यता दी जाती है।

SREX

ग्रीनहाउस गैस (GHGs)

ग्रीनहाउस गैस, वातावरण में दूसरे गैसों की तरह ही प्राकृतिक और मानवजनित दोनों तरीकों से मौजूद रहती हैं, जो पृथ्वी की सतह, वायुमंडल और बादलों के ज़रिए पैदा हुए स्थलीय विकिरण के स्पेक्ट्रम के भीतर विशिष्ट वेवलेंथ पर रेडिएशन को अवशोषित और उत्सर्जित करती हैं। इस खूबी के कारण ग्रीनहाउस प्रभाव होता है। जल वाष्प (H_2O), कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O), मीथेन (CH_4) और ओज़ोन (O_3) पृथ्वी के वायुमंडल में प्रमुख GHGs हैं। इसके अलावा, वायुमंडल में पूरी तरह से मानव निर्मित GHGs हैं, जैसे कि हैलोकार्बन और अन्य क्लोरीन - और ब्रोमिन - युक्त पदार्थ, जिनसे मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत निपटा जाता है।

SR1.5

जोखिम

कोई प्राकृतिक या मानव-निर्मित भौतिक घटना, जिसके कारण मौत होना, चोट लगना या स्वास्थ्य संबंधी अन्य दुष्प्रभाव पड़ सकते हैं। साथ ही, इनसे संपत्ति, बुनियादी ढाँचे, आजीविका, सेवा प्रावधान और पर्यावरणीय संसाधनों को भी नुकसान और क्षति पहुँच सकती है।

SREX

कड़ी गर्मी

असामान्य रूप से और असुविधाजनक रूप से गर्म मौसम का समय।

AR5 SYR

मानव सुरक्षा

एक ऐसी अवस्था, जब मानव जीवन के मूल तत्व की सुरक्षा की गई हो और जब लोगों के पास सम्मान से जीने की आज़ादी और क्षमता होती है। जलवायु परिवर्तन के संबंध में मानव जीवन के मूल तत्व में वैश्विक और सांस्कृतिक विशिषता, भौतिक और गैर-भौतिक तत्व शामिल हैं, जो लोगों को अपने हितों के लिए कार्य करने और सम्मान के साथ जीने के लिए आवश्यक हैं।

AR5 WG2

प्रभाव

इसका मतलब है, प्राकृतिक और मानव तंत्र पर महसूस किए गए जोखिमों के परिणाम, जो जलवायु से संबंधित जोखिमों (चरम मौसम और जलवायु घटनाओं सहित), एक्सपोज़र और संवेदनशीलता के साथ परसपरक्रिया से उत्पन्न होते हैं। आम तौर पर प्रभाव को जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव के तौर पर दिखाया जाता है; इसमें आजीविका; स्वास्थ्य और सेहत; पारिस्थितिकि तंत्र और प्रजातियां; आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संपत्ति; सेवाएँ (पारिस्थितिकी तंत्र की सेवाओं सहित); और बुनियादी ढाँचा शामिल है। प्रभावों को परिणाम या नतीजे के रूप में दर्शाया जा सकता है और यह नुकसानदायक या फ़ायदेमंद भी हो सकते हैं।

SR1.5

प्रभाव का आकलन करना

यह जलवायु परिवर्तन का प्राकृतिक या मानवीय तंत्रों पर पड़ने वाले प्रभावों को आर्थिक या/और गैर-आर्थिक तरीके से पहचानने और उसके मूल्यांकन करने का कार्य है।

AR5 WG2

स्वदेशी लोग

स्वदेशी लोग और राष्ट्र वे हैं, जो पूर्व-आक्रमण और पूर्व-औपनिवेशिक समाजों के साथ एक ऐतिहासिक निरंतरता रखते हैं, जो खुद को अपने क्षेत्रों पर विकसित हुए, उन क्षेत्रों या उन हिस्सों पर प्रचलित समाजों के अन्य क्षेत्रों से अलग मानते हैं। सैद्धांतिक तौर पर, वर्तमान में, वे समाज के मुख्य रूप से गैर-प्रबल क्षेत्रों का निर्माण करते हैं और अक्सर अपने पैतृक क्षेत्रों और अपनी जातीय पहचान को संरक्षित, विकसित करने के लिए और लोगों के रूप जैसे वे रहते रहे हैं - सांस्कृतिक तौर तरीके, सामाजिक संस्थान और आम कानून प्रणाली - को अपने अस्तित्व के आधार के रूप में भविष्य की पीढ़ियों को देने दृढ़ होते हैं ।

AR5 WG2

औद्योगिक क्रांति

दूरगामी सामाजिक और आर्थिक नतीजों के साथ तीव्र औद्योगिक विकास का वो समय जो ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान शुरू हुआ और बाद में, यूरोप और अमेरिका सहित दूसरे देशों में फैल गया। इस विकास में भाप के इंजन का अविष्कार सबसे महत्वपूर्ण कदम था। औद्योगिक क्रांति को विशेष तौर पर जीवाश्म के कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) उत्सर्जन और जीवाश्म ईंजन के अत्यधिक इस्तेमाल की शुरूआत माना जाता है।

AR5 SYR

असंगठित क्षेत्र

ऐसे वाणिज्यिक उद्यम (ज़्यादातर छोटे) जो रजिस्टर नहीं किए गए होते हैं या फिर अधिकारिक नियमों या कानूनों के अधीन नहीं आते हैं। ऐसे कारोबार, असंगठित क्षेत्र में होते हैं, इनके ज़रिए दी जाने वाली सेवाओं और सामानों की मात्रा, कर्मचारियों की संख्या, गैर-कानूनी सीमाएँ और संगठित क्षेत्र से इनके जुड़ाव में काफ़ी अंतर होता है। कई असंगठित उद्यमों में संगठित-क्षेत्र के उद्यमों की कुछ विशेषताएं होती हैं, और कुछ लोग संगठित क्षेत्र में असंगठित रोजगार भी करते हैं, क्योंकि उनके पास कानूनी सुरक्षा या रोजगार के लाभ की कमी होती है।

AR5 WG2

अनौपचारिक बस्ती

इस शब्दावली का प्रयोग ऐसी बस्तियाँ और रहने वाले क्षेत्रों के लिए किया जाता है, जो कम से कम एक कसौटी पर खरे उतरते हैं, कि यह अधिकारिक नियमों और कानूनों का पालन नहीं करते हैं। अधिकतर ऐसी बस्तियों में घरों का निर्माण खराब तरीके से (अधिकतर अस्थायी सामग्रियों का इस्तेमाल) होता है और गैर-कानूनी तरीके से ज़मीन पर कब्ज़ा करके ज़मीन का इस्तेमाल किया जाता है, यहाँ बहुत ज़्यादा लोग रहते हैं। इस तरह की अधिकतर बस्तियों में शुद्ध जल, साफ-सफाई, नाली, सड़क और दूसरी बुनियादी सुविधाएँ नहीं होती हैं या कम होती हैं। अक्सर ऐसी अनौपचारिक बस्तियों के लिए स्लम शब्द का इस्तेमाल किया जाता है, हालाँकि यह शब्द बहुत भ्रम पैदा करता है, क्योंकि बहुत सी अनौपचारिक बस्तियाँ अच्छी गुणवत्ता वाले आवासीय क्षेत्रों में विकसित होती हैं, खासकर जहाँ सरकारें इस तरह के विकास में सहयोग करती हैं।

AR5 WG2

संस्थाएँ

संस्थाएँ ऐसे नियम और मानदंड स्थापित करती हैं जो सामाजिक संगठनों या कार्यकर्ताओं के बीच मानवीय मेलजोल को निर्देशित और प्रतिबंधित और निश्चित स्वरूप प्रदान करते हैं। संस्थाएँ औपचारिक हो सकती हैं, जैसे कि कानून और नीतियाँ; या अनौपचारिक हो सकती हैं, जैसे कि मानक और चलन। संगठन - जैसे कि संसद, नियामक एजेंसी, निजी फ़र्म और सामुदायिक निकाय - संस्थानिक रूपरेखाओं के मुताबिक विकसित होते हैं और क्रियाकलाप करते हैं और संस्थानों द्वारा तय किए जाने वाले लाभों का फ़ायदा उठाते हैं। संस्थाएँ, प्रत्यक्ष नियंत्रण और प्रोत्साहन के ज़रिए और सामाजीकरण की प्रक्रियाओं के ज़रिए मानवीय मेलजोल को निर्देशित, प्रतिबंधित और आकार दे सकती हैं।

AR5 WG2

एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन

एक ऐसी प्रक्रिया जो आवश्यक पारिस्थितिकि तंत्र के स्थायित्व से समझौता किए बिना आर्थिक और सामाजिक कल्याण को और अधिक पाने के लिए जल, ज़मीन और इससे जुड़े संसाधनों के समन्वित विकास और प्रबंधन को बढ़ावा देती है।

SR1.5

एकीकृत तटीय क्षेत्र

प्रबंधन तटीय क्षेत्रों के निरंतर प्रबंधन के लिए, सभी तटीय आवासियों और उनके उपयोगों को ध्यान में रखते हुए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाया जाता है।

AR5 SYR

जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (IPCC)

जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (IPCC) की स्थापना विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण द्वारा की गई थी ताकि वैज्ञानिक जानकारी का एक निष्पक्ष स्रोत उपलब्ध कराया जा सके। 2013 में जब IPCC ने जब अपनी पांचवीं आकलन रिपोर्ट जारी की तब उसने जलवायु परिवर्तन में मानवीय गतिविधियों की भूमिका के बारे में अधिक स्पष्टता प्रदान की। उनके निष्कर्ष में यह स्पष्ट है: जलवायु परिवर्तन वास्तविक है और मानवीय गतिविधियां इसका मुख्य कारण हैं।

UN

बीमा /पुनः बीमा

जोखिम वाले घरों, व्यवसायों और/या सरकारों के बीच जोखिम को साझा और स्थानांतरित करने के लिए वित्तीय साधनों का समूह।

SREX

क्योटो प्रोटोकोल

जलवायु परिवर्तन पर यूनाइटेड नेशंस फ़्रेमवर्क कंवेंशन का क्योटो प्रोटोकोल, एक अंतरराष्ट्रीय संधि है, जिसे दिसंबर, 1997 में जापान के क्योटो में पार्टिज ऑफ़ द कांफ़्रेंस के तीसरे सत्र में UNFCCC के लिए अपनाया गया। यहाँ UNFCCC में दर्ज नियमों के अलावा बाध्यकारी कानूनी समझौते हुए। प्रोटोकॉल के संलग्नक बी में शामिल देशों के (ज़्यादातर OECD देशों और संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों) बीच सहमति बनी कि पहली प्रतिबद्धता अवधि (2008–2012) में 1990 के स्तर से कम से कम 5% अपने मानवजनित ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन को कम करने के लिए सहमत हुए। क्योटो प्रोटोकॉल 16 फरवरी 2005 को लागू हुआ और मई 2018 तक 192 देश या पार्टियाँ (191 राज्य और यूरोपीय संघ) इसमें शामिल थीं।

SR1.5

ज़मीन पर कब्ज़ा करना

औद्योगिक कृषि, न्यूनीकरण परियोजनाएँ या जैव ईंधन के लिए भूमि या पानी के अधिकार का बड़ा अधिग्रहण, जो स्थानीय और कमज़ोर समुदायों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

AR5 WG2

भूमि उपयोग और भूमि उपयोग परिवर्तन

भूमि उपयोग से आशय, एक प्रकार के भू-आवरण पर की गयी (सभी प्रकार की मानवीय गतिविधियाँ) समग्र व्यवस्थाओंएँ, गतिविधियों और आदानों से है । भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है, जिसके लिए भूमि का प्रबंधन किया जाता है (जैसे, चराई, लकड़ी की निकासी और संरक्षण)। भूमि उपयोग परिवर्तन का तात्पर्य मनुष्यों द्वारा भूमि के उपयोग या प्रबंधन में परिवर्तन से है, जिससे भू-आवरण में परिवर्तन हो सकता है। भू-आवरण और भूमि उपयोग में परिवर्तन का असर ऐल्बीडो, वाष्पीकरण, स्रोतों और ग्रीनहाउस गैसों के सिंक, या जलवायु प्रणाली के अन्य गुणों पर पड़ सकता है और इस प्रकार यह स्थानीय रूप से या विश्व स्तर पर विकिरणकारी बल और / या अन्य प्रभावों को जन्म दे सकता है।

AR5 WG2

आजीविकाएँ

जीने के लिए जिन संसाधनों का इस्तेमाल किया जाता है और जो कार्य किए जाते हैं। आम तौर पर आजीविका उन अधिकारों और संसाधनों को कहते हैं, जो लोगों की पहुँच में होते हैं। ऐसे संसाधनों को

मानव, सामाजकि, प्राकृतकि, भौतकि या वत्तिीय के रूप में वर्गीकृत कयिा जा सकता है।

AR5 WG2

स्थानीय आपदा जोखमि प्रबंधन करना (LDRM)

ह प्रक्रयिा जसिमें स्थानीय अभनिता (नागरकि, समुदाय, सरकार, गैर-लाभकारी संगठन, संस्थाएँ, और व्यवसाय) शामलि होते हैंऔर आपदा के जोखमि को समझते और पहचानते हैं, उसका वश्लिेषण करते हैं, उसके वकिास को समझते हैं, उस पर नगिाह रखते और उससे बचने के उपाय करते हैं। साथ ही, आपदा, एक्सपोज़र या संवेदनशीलता को समझ कर उसे कम करने या समाप्त करने के लए जोखमि को बदलने, आपदा से बचने या जुझने की क्षमता को सुधारते और उससे बचने की योग्यताओं को बढ़ाने का प्रयास करते हैं। आम तौर पर LDRM को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बाहरी लोगों के साथ समन्वय और सहयोग की आवश्यकता होती है। समुदाय-आधारति आपदा जोखमि प्रबंधन LDRM का उपवर्ग है जहाँ मुख्य रूप से समुदाय के सदस्य और संगठन नर्णिय लेते हैं।

SREX

लॉक-इन

लॉक-इन तब होता है, जब बाज़ार कसिी एक मानक में फँस जाता है, हालाँकि प्रतभिागियों के लिए ज़्यादा अच्छा यह होता है कि उनके पास कोई और वकिल्प हो। इस रपिोर्ट में, लॉक-इन का इस्तेमाल मोटे तौर पर पाठ नर्भिरता के रूप में कयिा गया है, जो एक ऐसी सामान्य स्थति है, जहाँ समय के कसिी एक बदिु में लए गए नर्णिय, हुई घटनाएँ या नकिले परणिाम, आगे आने वाले समय के कसिी दूसरे बदिु में होने वाले अनुकूलन, बदलावों में आने वाली कमी या अन्य क्रयिाओं या वकिल्पों को सीमति करते हैं।

AR5 SYR

घाटा और नुकसान

रसिर्च में घाटा और नुकसान लखिने को लेकर राजनीतकि बहस है। घाटा और नुकसान पर 2013 में वारसॉ तंत्र की स्थापना के बाद UNFCCC में इसे मान्यता दी गई, जो कि 'जलवायु परविर्तन के प्रभावों के साथ ही चरम घटनाएँ और वकिासशील देशों में धीमी गति से होने वाली घटनाओं, खास तौर से जलवायु परविर्तन के प्रतकिूल प्रभावों के प्रति संवेदनशीलता को बताता है।'

SR1.5

कम पछतावा नीति (लो रग्रिेट पॉलसिी)

एक ऐसी नीति जो वर्तमान जलवायु और भवषि्य के अलग-अलग जलवायु परदृिश्यों के तहत शुद्ध सामाजकि और या आर्थकि लाभों को तैयार करेगी।

AR5 WG2

खराब अनुकूलन

ऐसे कार्य, जसिसे जलवायु से जुड़े खराब प्रभावों का खतरा बढ़ जाता है, इसमें वर्तमान में या भवषि्य में GHG उत्सर्जनों का बढ़ना, जलवायु परविर्तन से संवेदनशीलता का बढ़ना और कल्याण के काम न होना शामलि हैं। खराब अनुकूलन, आम तौर पर एक अनपेक्षति परणिाम होता है।

SR1.5

प्रवासन

'कसिी व्यक्ति या लोगों का समूह एक जगह से दूसरी जगह, चाहे कसिी अंतरराष्ट्रीय सीमा या फरि कसिी राज्य के अंदर की सीमा के बीच जाएँ', इसे द इंटरनेशनल आर्गनाइज़ेशन फॉर माइग्रेशन (IOM) प्रवासन के तौर पर परभिाषति करता है। यह कसिी आबादी का एक जगह से दूसरी जगह जाना है, जसिमें व्यापक स्तर पर लोगों की कसिी भी तरह की आवाजाही शामलि होती है, फरि इसकी संख्या, संरचना और कारण कुछ भी हो। शरणार्थयिों, वस्थिापतिों, प्रवासयिों और परविार के पुनर्मलिन सहति अन्य उद्देश्यों के लिए जाने वाले व्यक्तयिों का प्रवास शामलि है।'(IOM, 2018)

SR1.5

शमन (आपदा और आपदा के जोखमिों का)

खतरे, जोखमि और असुरक्षा को कम करने वाले कार्यों के माध्यम से शारीरकि/भौतकि खतरों (जनिमें मानव-प्रेरति हैं) के संभावति प्रतकिूल प्रभावों को कम करना।

AR5 WG2

शमन (जलवायु परविर्तन का)

स्रोतों को कम करने या ग्रीनहाउस गैसों के सकि को बढ़ाने के लिए मानवीय हस्तक्षेप।

AR5 WG2

राष्ट्रीय स्तर पर नर्धिारति योगदान (NDCs)

(NDCs) जलवायु परविर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) के तहत इस्तेमाल कयिा जाने वाला एक शब्द जसिसे पेरसि समझौते में शामलि होने वाला देश अपने उत्सर्जन को कम करने की अपनी योजनाओं की रूपरेखा तैयार

करता है। कुछ देशों के एनडीसी यह भी बताते हैं कि वे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल कैसे होंगे, और निम्न-कार्बन पथों को अपनाने के लिए और जलवायु लचीलापन बनाने के लिए उन्हें अन्य देशों से क्या समर्थन चाहिए या वो क्या प्रदान करेंगे। पेरिस समझौते की धारा 4 के दूसरे पैराग्राफ़ के अनुसार, हर देश ऐसे NDCs को तैयार करेगा, जिसे वह पाना चाहता है और इसका प्रचार करेगा और इस पर काम भी करेगा। 2015 में पेरिस में, पार्टियों के 21वें कांफ़्रेस में, सभी देशों ने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (INDCs) को प्रस्तुत किया। जैसे ही देश, पेरिस समझौते में शामिल होते हैं, जब तक कि वे अन्यथा निर्णय नहीं लेते हैं, तब तक यही उनका पहला राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) बन जाता है।

SR1.5

शुद्ध शून्य उत्सर्जन

शुद्ध शून्य उत्सर्जन तब प्राप्त होता है, जब किसी विशेष अवधि के दौरान, मानव-जनित कार्यों के ज़रिए वातावरण में होने वाले ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को ऐसे मानव-जनित कार्यों के ज़रिए संतुलित किया जाता है जो इन उत्सर्जनों को हटाने के लिए किए जाते हैं।

जब वातावरण में कई तरह की ग्रीनहाउस गैस होती हैं, तब शुद्ध शून्य उत्सर्जन का निर्धारण इस बात पर निर्भर करता है कि अलग-अलग गैसों (जैसे कि ग्लोबल वार्मिंग की क्षमता, वैश्विक तापमान में परिवर्तन की क्षमता और इसी तरह की अन्य बातें, इसके साथ ही इसके लिए क्या समय- सीमा चुनी गई है) के उत्सर्जनों की तुलना करने के लिए किस जलवायु मीट्रिक का चुनाव किया गया है।

SR1.5

महासागर अम्लीकरण

लंबे समय तक महासागर के pH में कमी को महासागर का अम्लीकरण कहते हैं, यह आम तौर पर दशकों या उससे ज़्यादा समय में होता है। इसका सबसे प्रमुख कारण, वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा का ऊपर जाना है, लेकिन महासागर में दूसरे रसायनों का बढ़ना या कम होना भी कारण हो सकते हैं। मानवजनित महासागर अम्लीकरण का मतलब मानवीय गतिविधियों के कारण pH के विभिन्न घटकों का कम होना है।

AR5 SYR

पेरिस समझौता

UNFCCC के तहत पेरिस समझौते को पेरिस, फ़्रांस में दिसंबर 2015 को UNFCCC को पार्टियों के सम्मेलन (COP) के 21 वें सत्र में अपनाया गया था। यूएनएफसीसीसी को 196 पार्टियों द्वारा अपनाया गया समझौता, 4 नवंबर 2016 को लागू हुआ और मई 2018 तक 195 हस्ताक्षर थे और 177 दलों द्वारा इसकी पुष्टि की गई थी। पेरिस समझौते का एक उद्देश्य, 'पूर्व-औद्योगिक समय के वैश्विक औसत तापमान की वृद्धि को 2 सेंटीग्रेड पर रोकना और 1.5 सेंटीग्रेड तक सीमित करने का प्रयास करना है।', यह मानते हुये कि इससे जलवायु परिवर्तन के जोखिमों और प्रभावों में काफी कमी आएगी। इसके अलावा, पेरिस समझौते का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने में देशों की क्षमता बढ़ाना है।

SR1.5

पथ निर्भरता (पाथ डिपेंडेन्स)

यह एक ऐसी सामान्य स्थिति है, जहाँ समय के किसी एक बिंदु में लिए गए निर्णय, हुई घटनाएँ या निकले परिणाम, आगे आने वाले समय के किसी दूसरे बिंदु में होने वाले अनुकूलन, बदलावों में आने वाली कमी या अन्य क्रियाओं या विकल्पों को सीमित करते हैं।

AR5 WG2

पथ

यह भविष्य की स्थिति के लिए प्राकृतिक और/या मानवीय तंत्रों के अस्थायी विकास है। पथ की अवधारणा, मात्रात्मक और गुणात्मक स्थितियों या संभावित भविष्य को पाने के लिए, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से लेकर सोचे हुए सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए होती है। सामान्य तौर पर पथ का दृष्टिकोण, बॉयोफ़िजिकल, तकनीकी-आर्थिक और/या सामाजिक-व्यवहार संबंधी विकास पथ पर ध्यान केंद्रित करना है और इसमें विभिन्न आयाम, लक्ष्यों और लोगों को विभिन्न स्तरों पर शामिल करना है।

SR1.5

उप-शहरी क्षेत्र (पेरी-अर्बन एरिया)

पेरी-अर्बन क्षेत्र उनको कहते हैं, जो शहरों के बाहरी हिस्से होते हैं, गाँवों की तरह लगते हैं, लेकिन वास्तव में वे प्रतिदिन के कामों के लिए शहरों से पूरी तरह से जुड़े होते हैं।

SR1.5

प्रक्षेपण (प्रोजेक्शन)

प्रोजेक्शन, संभावित भविष्य में विकास की जो स्थिति या स्थितियाँ होंगी, उनका अक्सर मॉडल की सहायता से अनुमान लगाया जाता है। भविष्यवाणियों से अलग, प्रोजेक्शन, एक सशर्त अनुमान है, उदाहरण के लिए, भविष्य के सामाजिक

आर्थिक और तकनीकी विकास, जो हो भी सकते हैं और नहीं भी।

AR5 WG2

गरीबी

अलग-अलग विचारधाराओं से विभिन्न परिभाषाओं के कारण, गरीबी एक जटिल अवधारणा है। भौतिक परिस्थितियों (जैसे ज़रूरत, अभाव की दशा या सीमित संसाधनों), आर्थिक परिस्थितियों (जैसे जीवन स्तर, गैरबराबरी या आर्थिक स्थिति) और/या सामाजिक संबंध (जैसे सामाजिक स्तर, निर्भरता, हालात, बुनियादी सुरक्षा की कमी या हक न मिलना) को दर्शाता है।

AR5 WG2

ग़रीबी का जाल

ग़रीबी के जाल को सभी विषयों में अलग-अलग तरीके से समझा जाता है। सामाजिक विज्ञान में इसका मतलब है, मुख्यरूप से व्यक्तिगत, घरेलू या सामुदायिक स्तर के काम की ऐसी स्थिति, जिसमें अनुत्पादक या सीमित संसाधनों के कारण ग़रीबी से बचना असंभव हो जाता है। गरीबी के जाल को सबसे कम आय की सीमा के रूप में भी देखा जा सकता है, इस सीमा से कम में परिवार अपने बच्चों को सही तरीके से शिक्षित करने, अपनी उत्पादक क्षमता बढ़ाने और गरीबी से बाहर निकलने में असमर्थ रहता है। अत्यधिक ग़रीबी अपने आप में एक ग़रीबी का जाल है, जिसमें ग़रीब व्यक्ति समाज में अर्थपूर्ण तरीके भाग नहीं ले पता है। अर्थशास्त्र में, गरीबी का जाल शब्द का उपयोग हमेशा राष्ट्रीय पैमानों पर किया जाता है, इसमें एक ऐसे स्थायी हालात में अर्थव्यवस्था किसी दुष्चक्र में फंस जाती है, जिसमें विकास नहीं हो पाता है। (मत्सुयामा,2008)। किताबों में गरीबी के जाल के कई प्रस्तावित मॉडल हैं।

AR5 WG2

विकीरणशील बाध्यता (रेडिएटिव फ़ोर्सिंग)

पिछले आईपीसीसी आकलन के अनुसार, प्रति वर्ग मीटर (डब्लयू / एम 2) वॉट की इकाइयों में रेडिएटिव फोर्सिंग (RF) के रूप में चालक की ताकत निर्धारित की जाती है। RF एक चालक के कारण होने वाले ऊर्जा प्रवाह में परिवर्तन है और इसकी गणना ट्रोपोपॉज़ या वायुमंडल के शीर्ष पर की जाती है।

AR5 SYR

वन कटाई और वन क्षरण (REDD +) से उत्सर्जन कम करना

इसका अर्थ है, जंगलों में एकत्रित कार्बन के लिए वित्तीय मूल्य तैयार करने का प्रयास करना, जंगलों से उत्सर्जन को कम करने के लिए विकासशील देशों को प्रोत्साहित करना और कार्बन कम करने के तरीकों में निवेश करने के लिए सतत विकास (SD) को प्रोत्साहित करना। इसलिए यह शमन की एक प्रणाली है, जो वनों को कटाई से बचाने के परिणामस्वरूप होती है। REDD + वनीकरण और वन के नष्ट होने से अधिक है और इसमें संरक्षण, वनों के सतत प्रबंधन और वन कार्बन स्टॉक को बढ़ाने में भूमिका शामिल है। इस अवधारणा को पहली बार 2005 में मॉन्ट्रियल में कॉंफ्रेस ऑफ़ द पार्टीज़ (COP) के 11वें सत्र में पेश किया गया था। बाद में, बाली में 2007 में COP के 13वें सत्र में और बाली एक्शन प्लान में शामिल करने पर मान्यता दी गई, जिसे 'विकासशील देशों (डीएआरडी) में वनों की कटाई और वनों के नष्ट होने से उत्सर्जन को कम करने और उनका संरक्षण, वनों के सतत प्रबंधन और विकासशील देशों में वन कार्बन स्टॉक के संवर्द्धन से संबंधित मुद्दों पर दृष्टिकोण और सकारात्मक प्रोत्साहन करने की नीति' कहा गया।

AR5 SYR

क्षेत्र

कोई क्षेत्र, विशिष्ट भौगोलिक और जलवायु संबंधी विशेषताओं की खूबियों वाला इलाका होता है। किसी क्षेत्र की जलवायु, क्षेत्रीय और स्थानीय पैमाने, जैसे भौगोलिक स्थिति, भूमि के उपयोग की विशेषताएँ और झीलों, इसके साथ ही दूर से पड़ने वाले अन्य क्षेत्रों के प्रभाव से प्रभावित होती है।

AR5 WG1

रिप्रेजेंटेटिव कॉन्संट्रेशन पाथवेज़ (RCPs)

यह ऐसा परिदृश्य है, जिसमें ग्रीनहाउस गैसों (GHGs), एयरोसोल और रासायनिक रूप से सक्रिय सभी गैसों के उत्सर्जन और सांद्रता के साथ ही जमीन के इस्तेमाल/इसके क्षेत्रफल की समय श्रृंखला शामिल होती है (मॉस और अन्य, 2008)। यह शब्द प्रतिनिधि के रूप में दर्शाता है कि हर RCP कई संभावित परिदृश्यों में से केवल एक प्रदान करता है, जो विशिष्ट रेडिएक्टिव खूबियों का होता है। पाथवे शब्द इस बात पर ज़ोर देता है कि ब्याज का एकाग्रता स्तर न केवल दीर्घकालिक है, बल्कि उस नतीजे तक पहुँचने के लिए विकास मार्ग ने भी समय लिया है(मॉस और अन्य, 2010)।

R5 SYR

समुत्थान शक्ति (रिज़िलिअन्स)

सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय तंत्रों की वो क्षमता जो एक खतरनाक घटना या प्रवृत्ति या

गड़बड़ी से नपिटने के लिए होती है, यह अपने ज़रूरी कार्य, अपनी पहचान और संरचना को बनाए रखती है या उन तरीकों को फरि से बना लेती है, जबकि अनुकूलन, सीखने और परविर्तन की क्षमता भी बनाए रखती है।

AR5 WG2

जोखमि

उन परणिामों की संभावना जहाँ कुछ कीमती चीज दांव पर होती है और जहाँ नतीजे का कुछ पता नहीं होता है, कीमत में वभिन्निता होती है। जोखमि को अक्सर खतरनाक घटनाओं या प्रवृत्तयिों की संभावना के रूप में दर्शाया जाता है, अगर ये घटनाएँ या रुझान के प्रभावों से यह कई गुना बढ़ जाते हैं। जोखमि संवेदनशीलता, एक्सपोजर और खतरे की पारस्परकि क्रयिा के परणिामस्वरूप होता है। इस रपिोर्ट में, जलवायु-परविर्तन के प्रभावों के जोखमिों को संदर्भति करने के लिए खास तौर पर जोखमि शब्द का इस्तेमाल कयिा गया है।

AR5 WG2

जोखमि मूल्यांकन

जोखमिों का गुणात्मक और/या मात्रात्मक वैज्ञानकि आकलन।

AR5 WG2

जोखमि प्रबंधन

योजनाओं, कार्यों या नीतयिों में जोखमि की संभावना को कम करना और/या उसके नतीजों को कम करने या उससे बचने के लिए प्रबंधन करना।

AR5 WG2

जोखमि की अवधारणा

व्यक्तपिरक नर्णिय जो लोग जोखमि की वशिषताओं और गंभीरता के बारे में करते हैं।

AR5 WG2

जोखमि स्थांतरण

औपचारकि रूप से या अनौपचारकि रूप से वशिष जोखमिों के वत्तिीय परणिामों को एक पार्टी से दूसरे पक्ष में स्थानांतरति करने की प्रक्रयिा जसिसे एक घरेलू, समुदाय, उद्यम या राज्य प्राधकिरण उस अन्य दल को प्रदान कएि गए चल रहे या प्रतपूिरक सामाजकि या वत्तिीय लाभों के बदले में आपदा आने के बाद दूसरे पक्ष से संसाधन प्राप्त करेगा ।

SREX

परदृिश्य

भवष्यि के प्रमुख प्रेरक बलों (जैसे, तकनीकी परविर्तन की दर, कीमतों) और रशि्तों के बारे में मान्यताओं के एक सुसंगत और आंतरकि रूप से सुसंगत सेट के आधार पर भवष्यि कैसे वकिसति हो सकता है, इसका एक प्रशंसनीय ववरिण। ध्यान दें कि परदृिश्य न तो भवष्यिवाणियां हैं और न ही पूर्वानुमान हैं, लेकनि वकिास और कार्यों के नहितिार्थों का दृश्य प्रदान करने के लिए उपयोगी हैं।

AR5 WG2

समुद्र के स्तर में बदलाव

(1) सागर के पानी के द्रव्यमान में परविर्तन के परणिाम स्वरूप सागर के आयतन में परविर्तन होने से वैश्वकि और स्थानीय स्तर पर (सापेक्षकि रूप से समुद्र के स्तर में बदलाव) दोनों में समुद्र का स्तर बदल सकता है,(2) समुद्र के पानी के घनत्व में बदलाव होने से सागर के पानी के घनत्व में बदलाव होता है, (3) सागर के बेसनि के आकार में परविर्तन, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण और रोटैशनलफ़ील्ड में बदलाव होने और (4) स्थानीय स्तर पर जमीन कम होने और जमीन के उठने लगने से भी समुद्र के स्तर में बदलाव हो सकता है।

SR1.5

समुद्र सतह तापमान

समुद्र की सतह का तापमान समुद्र के कुछ शीर्ष मीटरों में उप-सतह का तापमान होता है, जसिे जहाजों, बौरों और बहावों द्वारा मापा जाता है।

SR1.5

पृथक्करण

कसिी स्थलीय या समुद्री जलाशयों में संग्रहति कार्बन से बनी चीजों, खास तौर पर कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण (यानी, कसिी संग्रह से जुड़ा कोई अतरिक्ति पदार्थ) होना है। जैवकि पृथक्करण में भूमि-उपयोग परविर्तन (LUC), वनीकरण, पुन: वनरोपण, पुन: वनस्पतीयन, भराव क्षेत्र में कार्बन भंडारण और कृषि (मृदा प्रबंधन, चराई भूमि प्रबंधन) में मट्टिी के कार्बन को बढ़ाने वाली प्रथाओं के माध्यम से वातावरण से प्रत्यक्ष रूप से CO_2 को हटाना शामलि है।

AR5 SYR

सकि

कोई भी प्रक्रयिा, गतविधिि या तंत्र जो ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी), एक एयरोसोल या वातावरण से जीएचजी या एयरोसोल के पूर्व लक्षण नकिालता है।

AR5 SYR

सौर वकिरिण संशोधन (सोलर रेडएिशन मॉडफ़िकिशन)

सोलर रेडएिशन मॉडफ़िकिशन का मतलब गर्मी

को कम करने के लिए, पृथ्वी के शॉर्टवेव रेडिएटिव बजट को सोचसमझ कर बदलना है। स्ट्रैटोस्फेरिक एरोसोल के कृत्रिम इंजेक्शन, समुद्री क्लाउड ब्राइटनिंग और भूमि की सतह अल्बीडो संशोधन प्रस्तावित एसआरएम विधियों के उदाहरण हैं।

SR1.5

तूफानी लहर

चरम मौसम संबंधी परिस्थितियों (कम वायुमंडलीय दबाव और/या तेज हवाओं) के कारण किसी खास इलाके में समुद्र की ऊंचाई अस्थायी तौर पर बढ़ जाती है। तूफान के बढ़ने का मतलब है, उस समय और स्थान पर अकेले जितना ज्वार से बढ़ने की उम्मीद की जाती है, उससे ज़्यादा बढ़ जाना।

AR5 SYR

तनाव पैदा करने वाल

अक्सर जलवायु से संबंध नहीं रखने वाली वे घटनाएँ और प्रवृत्तियाँ जो कि खुले हुए तंत्र पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं और जलवायु से संबंधित जोखिम के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ा सकती हैं।

AR5 WG2

सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य

ऐसा परिदृश्य जो जलवायु परिवर्तन के निहितार्थों को समझने के लिए प्रासंगिक जनसंख्या, सकल घरेलू उत्पाद और अन्य सामाजिक आर्थिक कारकों के संदर्भ में संभावित भविष्य का वर्णन करता है।

AR5 WG2

सामाजिक सुरक्षा

विकास के लिए सहायता और जलवायु नीति के संदर्भ में, सामाजिक सुरक्षा, आम तौर पर सार्वजनिक और निजी पहल को दर्शाती है, जो आय या उपभोग के सामान गरीबों को देता है, आजीविका में जोखिमों के समय कमज़ोर लोगों की रक्षा करती है और इसका समग्र उद्देश्य, गरीब, कमज़ोरर और हाशिए पर खड़े लोगों की आर्थिक और सामाजिक परेशानियों को कम करना और कमज़ोर लोगों की सामाजिक स्थिति और अधिकारों को बढ़ाना है। (डेवर्क्स और सबेट्स-व्हीलर, 2004)।

AR5 WG2

संधारणीयता

यह एक गतिशील प्रक्रिया है, जो समान तरीके से प्राकृतिक और मानव तंत्रों की संधारणीयता की गारंटी देती है.

AR5 WG2

सतत विकास

ऐसा विकास जो वर्तमान की आवश्यकताओं को बिना समझौता किए पूरा करता है, साथ ही भविष्य की पीढ़ियों की ज़रूरतों को पूरा करने की क्षमता देता है।

SREX

सतत विकास के लिए 2030 का ऐजेंडा

सितंबर 2015 में संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव में एक नए वैश्विक विकास ढांचे में लोगों और विश्व के लिए एक्शन प्लान को अपनाया है और नए वैश्विक फ्रेमवर्क में समृद्धि के लिए 17 सतत विकास लक्ष्यों को तैयार किया (UN, 2015)।

AR5 WG2

टिपिंग प्वाइंट

किसी सिस्टम की विशेषताओं में परिवर्तन के एक लेवल के बाद एक नया सिस्टम तैयार होता है, जो हमेशा अचानक होता है और यह प्रारंभिक अवस्था में वापस नहीं आता है, भले ही परिवर्तन के कारकों को समाप्त कर दिया गया हो। जब वैश्विक या क्षेत्रीय जलवायु एक स्थिर अवस्था से दूसरे स्थिर अवस्था में बदल जाती है, तब जलवायु तंत्र में यह एक महत्वपूर्ण सीमा को दर्शाता है। यह टिपिंग प्वाइंट की घटना अपरिवर्तनीय हो सकती है।

AR5 SYR

पारंपरिक ज्ञान

ऐसी जानकारी, नवाचार और अभ्यास, जो पूरी दुनिया में देशज और स्थानीय समुदायों के बीच लंबे समय से उनकी परंपरा और अनुभव पर आधारित होते हैं। पारंपरिक ज्ञान बदलता रहता है और सांस्कृतिक और पर्यावरण बदलाव को अपना लेता है। साथ ही, ज्ञान और दृष्टिकोण के दूसरे रूपों को भी अपना लेता है। पारंपरिक ज्ञान आम तौर पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से आगे बढ़ता रहता है। इसका इस्तेमाल अक्सर स्वदेशी ज्ञान, स्थानीय ज्ञान या पारंपरिक पारिस्थितिकि पर आधारित जानकारी के तौर पर किया जाता है।

AR5 WG2

रूपांतर

इसमें, मानवीय या प्राकृतिक तंत्रों के मौलिक गुणों में कोई परिवर्तन होता है।

AR5 WG2

जलवायु परविर्तन पर संयुक्त राष्ट्र का फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC)

UNFCCC को मई 1992 में स्वीकार कयिा गया और रयिो डी जनेरयिो में 1992 के अर्थ सबमटि में हस्ताक्षर के लएि रखा गया. यह मार्च 1994 में लागू हुआ और मई 2018 तक 197 देश (196 राज्य और यूरोपीय संघ) शामलि हो गए थे। कन्वेंशन का समग्र उद्देश्य 'वातावरण में ग्रीनहाउस गैस सांद्रता को एक स्तर पर रोकना है, जो जलवायु प्रणाली के साथ कएि जाने वाले खतरनाक मानवजनति हस्तक्षेप को रोकेगा।' कन्वेंशन के प्रावधानों को दो संधयिों, क्योटो प्रोटोकॉल और पेरसि समझौते के ज़रएि लागू और कार्यान्वति कयिा जाता है।

SR1.5

संवेदनशीलता

यह प्रतकि्लता से प्रभावति होने की प्रवृत्ति या पूर्वाभ्यास है। संवेदनशीलता के कई तरह के दृष्टकिोण और सोच हैं, इसमें नुकसान के प्रति संवेदनशील और बर्दाश्त करने की क्षमता होना और इसके अनुकूल होने और इसका समना करने की क्षमता में कमी, शामलि हैं।

AR5 WG2

मौसम वज्ञिान

मौसम वज्ञिान अपेक्षाकृत लंबे समय तक मौसम की स्थिति का अध्ययन है, जो आम तौर पर दशकों से सदयिों तक के समय का होता है, लेकनि यह भूवैज्ञानकि काल की समय सीमा में ही होता है. यह मुख्य रूप से वायुमंडलीय गुणों से संबंधति है - उदाहरण के लएि, तापमान और आर्द्रताऔर फैलाव का पैटर्न, साथ ही महासागर, जीवमंडल और भू-मंडल के साथ लंबे समय तक परसपरक्रयिा।

Nature

नवीकरणीय ऊर्जा (रनि्यूअब्ल्र एनर्जी)

रीनूअबल एनर्जी, उन स्रोतों से मलिने वाली एनर्जी है, जो हमारे जीवनकाल के भीतर अपने आप को नवीनीकृत करती रहेगी. रीनूअबल एनर्जी के स्रोतों में हवा, सूरज, पानी, बायोमास (वनस्पती) और भूतापीय गर्मी शामलि हैं.

UC Davis Science and Climate

मौसम

तापमान, बादल, वर्षा, हवा और अन्य मौसम संबंधी स्थतियिों के संबंध में वातावरण की स्थिति। यह जलवायु के समान नहीं है जो कि अधकि लंबी अवधि में औसत मौसम है।

BBC

तकनीकी हस्तांतरण

यह जलवायु में होने वाले बदलावों को कम करने और उनके साथ अनुकूलति करने के लएि, वभिन्नि हतिधारकों के बीच तकनीकी जानकारी, अनुभव और उपकरणों के प्रवाह को कवर करने वाली प्रक्रयिाओं का एक व्यापक तरीका होता है।

UNFCCC

iihs®
INDIAN INSTITUTE FOR
HUMAN SETTLEMENTS

IIHS BENGALURU CITY CAMPUS
197/36, 2nd Main Road, Sadashivanagar, Bengaluru 560 080. India.
T +91 80 6760 6666 | F +91 80 2361 6814

IIHS CHENNAI
Floor 7A, Chaitanya Exotica, 24/51 Venkatnarayana Road, T Nagar
Chennai 600 017. India. T +91 44 6630 5500/6555 6590

IIHS DELHI
803, Surya Kiran, 19, Kasturba Gandhi Marg, New Delhi 110 001. India.
T +91 11 4360 2798 | F +91 11 2332 0477

IIHS MUMBAI
Flat No. 2, Purnima Building, Patel Compound, 20-C, Napean Sea Road
Mumbai 400 006. India. T +91 22 6525 3874

iihs.co.in